RNI No. : UPBIL/25/A0683

www.vicharsetu.com

वर्ष-02 | अंक-01 | जनवरी-फरवरी 2026 | पृष्ठ संख्या-44

मूल्य ₹ 40

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक

प्रयागराज से प्रकाशित

नितिन नबीन की ताजपोशी

भाजपा की नई पीढ़ी, नई राजनीति का संकेत

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ, मध्य प्रदेश में मोहन यादव को सत्ता की बागडोर सौंपकर राजनीतिक गलियारे में नई चर्चा छेड़ने वाली भाजपा ने फिर एक ऐसा फैसला लिया है, जिसने राजनीतिक पंडितों को बहस का नया मुद्दा दे दिया है। 45 वर्ष के नितिन नबीन को पार्टी का कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर भाजपा ने साफ कर दिया है कि उसकी नजर सिर्फ अगले चुनाव पर नहीं, बल्कि आने वाले वर्षों की राजनीति पर टिकी है।

विसि
विचार से विश्वास तक

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक रहेगा
प्रयागराज से प्रकाशित

राज, समाज, साहित्य, संस्कृति, कला एवं पर्यटन की राष्ट्रीय पत्रिका/समाचार पत्र

आप भी अपना विज्ञापन देकर कारोबार को बढ़ाएं

हर तस्वीर एक कहानी बताती है और हम अपनी पत्रिका से लाखों को बताते हैं। हम आपके लिए ऐसी तस्वीरें लेकर आए हैं जो बिना किसी भेदभाव के वास्तविक दुनिया और लोगों के बारे में सच्चाई बताती है।

हमारे साथ विज्ञापन करके अपने व्यवसाय को दें नई उड़ान

विज्ञापन की दरें :-

बैक कवर–21,000/-	फुल पेज– 11,000/-
फ्रंट इनर कवर–15,000/-	हाफ पेज– 6,000/-
बैक इनर कवर–15,000/-	क्वाटर पेज–3,000/-

विचार सेतु
विचार से विश्वास तक रहेगा
प्रयागराज से प्रकाशित

Follow us

संपादकीय कार्यालय : 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा, प्रीतम नगर, धूमनगंज, प्रयागराज -211011

Mob. No. 9598163216-7007044100
Website: www.vicharsetu.com
e-Mail: vicharsetu2024@gmail.com

06

नितिन नबीन की ताजपोशी

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ, मध्य प्रदेश में मोहन यादव को सत्ता की बागडोर सौंपकर राजनीतिक गलियारे नई चर्चा छेड़ने वाली भाजपा ने फिर एक ऐसा फैसला लिया है।

10

योगी आदित्यनाथ बने हिंदुत्व के प्रहरी

1528 में मीर बाकी द्वारा राम जन्मभूमि पर रामलला के मंदिर को ध्वस्त कर बनाई गई संरचना नमाज की जगह नहीं थी, बल्कि हिंदू समाज के खिलाफ...

12

यूपी की राजनीति में भाजपा की नई चाल

उत्तर प्रदेश में कुर्मी मतदाता न सिर्फ संख्या में प्रभावी हैं, बल्कि कई क्षेत्रों में चुनावी नतीजों को निर्णायक रूप से प्रभावित करते हैं। एनडीए की सहयोगी पार्टी अपना...

14

गोवाःफन प्लेस या हॉरर स्टोरी

आप कुछ दिनों से जिस गोवा की चर्चा क्लब में आग और कई लोगों की मौत की वजह से सुन रहे हैं, ध्यान दीजिए तो वो काफी वक्त से अपनी बदनामी भी चीखता...

46

नए साल पर सनी लियोन ने किया डांस

बॉलीवुड की जानी मानी एक्ट्रेस और मॉडल सनी लियोन अपनी खूबसूरती के साथ ही अपनी डांस परफॉर्मेंस के लिए भी जानी जाती हैं। नए साल के सेलिब्रेशन के मौके पर सनी लियोन की हर साल ही बुकिंग रहती है।

18

अरावली सुरक्षित तो भविष्य सुरक्षित

अरावली पर्वतमाला भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र से होकर गुजरती है और मरुस्थलीकरण को रोकने, पारिस्थितिक खाके का समर्थन...

26

वर्ष 2025 की इन घटनाओं ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया

इन दुर्घटनाओं में न सिर्फ जान-माल का नुकसान हुआ बल्कि ये देशवासियों के ....

आवश्यकता है

विचार सेतु

द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका के लिए राज्य, मंडल, जिला स्तर पर संवाददाता, ब्यूरो प्रमुख एवं प्रतिनिधि की तथा विज्ञापन एवं मार्केटिंग के लिए भी कर्मठ युवक युवतियों की आवश्यकता है। संपर्क करें :

9415189919, 9598163216, 7007044100

E-mail – vicharsetu2024@gmail.com
vicharsetumagzine@gmail.com

Website – www.vicharsetu.com

विचार सेतु

वर्ष-02, अंक-01, जनवरी, 2026

RNI No. : UPBIL/25/A0683
पृष्ठ संख्या-48, मूल्य- ₹ 40

सम्पादक : रेखा तिवारी

प्रधान सम्पादक : प्रदीप तिवारी, एडवोकेट
कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार

संरक्षक मण्डल
पदमश्री डॉ. सुनील जोगी, प्रेम जन्मेजय, रविनंदन सिंह, हर्ष वर्धन त्रिपाठी, डॉ. धनंजय चोपड़ा

समन्वय संपादक : शिवा शंकर पाण्डेय
राजनैतिक संवाददाता : भास्कर मिश्रा
सांस्कृतिक संवाददाता : राजेश ओझा

राज्य प्रतितिधि
उत्तर प्रदेश : विशाल ओझा
बिहार : डॉ. चंद्रकांत भट्ट
मध्य प्रदेश : सुमित ओरछा
दिल्ली/एनसीआर : काशी शर्मा
पंजाब : विजय गर्ग
राजस्थान : गगन अग्रवाल
उत्तराखंड : ज्ञान प्रकाश पाण्डेय
हरियाणा : गजेन्द्र सिंह 'दहिया'
महाराष्ट्र : डॉ. मोतीलाल गुप्त 'आदित्य'
उड़ीसा : डॉ. रजनीकांत मिश्र
असम : त्रिदीप कलिता
त्रिपुरा : तनुज शाह
पश्चिम बंगाल : मानवेंद्र शर्मा

डिजाइन एवं प्रोडक्शन
एनएम मीडिया सॉल्यूशंस (9717177725)

विधिक सलाहकार
जयवर्धन त्रिपाठी, आदर्श पराशर
अधिवक्ता इलाहाबाद उच्च न्यायालय,

छायाकार : संजय सागर, **अमित शर्मा**

पंजीकृत कार्यालय - 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा, प्रीतम नगर, धूमनगंज, प्रयागराज 211011
फोन: 9598163216,7007044100
9415189919
वेब : www.vicharsetu.com
ई-मेल : vicharsetu2024@gmail.com

स्वामी और प्रकाशक रेखा तिवारी द्वारा आइडियल ग्राफिक्स 48/136/2, पानदरीबा, शाहगंज, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश-211003 से प्रकाशित।

संपादक-रेखा तिवारी*
मुद्रक : आइडियल ग्राफिक्स

इस पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं

लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित

इस चयन में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद प्रयागराज न्यायालय के अधीन होंगें।

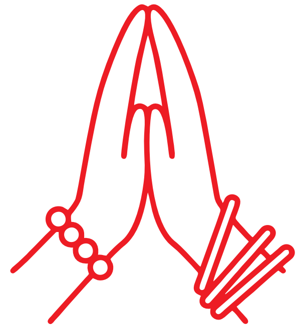

राजनीति में नई शब्दावली व नई रणनीतियों का जन्म

घटनाओं के पीछे छिपे सामाजिक और वैचारिक संकेत

विचार सेतु के जनवरी-फरवरी अंक के साथ आपसे पुनः संवाद स्थापित करते हुए हमें विशेष संतोष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका का दूसरा अंक है और इस मायने में भी महत्वपूर्ण कि पहले अंक को देश-भर के पाठकों, लेखकों और बौद्धिक वर्ग से जो स्नेह, प्रोत्साहन और सार्थक सुझाव प्राप्त हुए, उन्होंने हमारे विश्वास को और दृढ़ किया है कि वैचारिक संवाद की यह यात्रा सही दिशा में आगे बढ़ रही है।

आज का समय केवल सूचनाओं का नहीं, बल्कि विचारों की प्रामाणिकता और विवेकपूर्ण विश्लेषण का समय है। ऐसे दौर में विचार सेतु का उद्देश्य किसी एक मत, दल या दृष्टि को स्थापित करना नहीं, बल्कि विचारों के बीच सेतु बनाना है—जहां विविध दृष्टिकोण, असहमति और संवाद लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ स्थान पा सकें। द्विभाषी स्वरूप में प्रकाशित यह पत्रिका हिंदी और अंग्रेजी—दोनों भाषाओं के पाठकों को एक साझा वैचारिक मंच प्रदान करने का प्रयास है।

जनवरी-फरवरी अंक में समसामयिक राष्ट्रीय राजनीति, सामाजिक विमर्श, सांस्कृतिक प्रश्न, आस्था और परंपरा, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से जुड़े विभिन्न विषयों पर केन्द्रित आलेख सम्मिलित किए गए हैं। इन आलेखों का चयन करते समय हमारा आग्रह यही रहा है कि विषय केवल चर्चित न हों, बल्कि चिंतन को प्रेरित करने वाले हों।

समाचार से आगे जाकर उसके निहितार्थों को समझना,

घटनाओं के पीछे छिपे सामाजिक और वैचारिक संकेतों को पहचानना—यही इस अंक की मूल भावना है।

आज भारतीय समाज अनेक स्तरों पर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। राजनीति में नई शब्दावली और नई रणनीतियां जन्म ले रही हैं, समाज में पहचान और प्रतिनिधित्व के प्रश्न अधिक मुखर हो रहे हैं, वहीं आस्था, संस्कृति और परंपरा के विमर्श नए संदर्भों में सामने आ रहे हैं। विचार सेतु इन सभी विषयों को किसी पूर्वाग्रह के बिना, तथ्यों, तर्क और संतुलन के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

हम मानते हैं कि स्वस्थ लोकतंत्र केवल सत्ता और विपक्ष के संघर्ष से नहीं, बल्कि जागरूक नागरिक चेतना से मजबूत होता है। पत्रिकाएँ और वैचारिक मंच इसी चेतना को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अंक के लेख पाठकों को सहमत या असहमत होने का पूरा अवसर देते हैं—क्योंकि असहमति भी संवाद का ही एक आवश्यक पक्ष है।

यह अंक हमारे लिए इसलिए भी विशेष है क्योंकि यह यात्रा का दूसरा पड़ाव है। पहला कदम भरोसे के साथ उठा था, दूसरा कदम जिम्मेदारी के एहसास के साथ। आने वाले अंकों में विचार सेतु को और अधिक समावेशी, शोधपरक और पाठक-संवादी बनाने का हमारा संकल्प है। हम चाहते हैं कि पाठक केवल इसे पढ़ें नहीं, बल्कि इससे जुड़ें, प्रतिक्रिया दें और विचारों की इस यात्रा के सहभागी बनें।

मैं इस अवसर पर सभी लेखकों, अतिथि स्तंभकारों, सलाहकारों और पाठकों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग से यह अंक संभव हो सका। आपकी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव ही विचार सेतु की वास्तविक पूंजी हैं।

आइए, इस नए वर्ष के आरंभ में विचारों के इस सेतु पर खड़े होकर, समाज और राष्ट्र के भविष्य पर संवेदनशील, सार्थक और निर्भीक संवाद को आगे बढ़ाएं।

रेखा तिवारी

रेखा तिवारी

नितिन नबीन की ताजपोशी

भाजपा की नई पीढ़ी, नई राजनीति का संकेत

रेखा तिवारी

यह फैसला जितना संगठनात्मक है, उतना ही राजनीतिक और सामाजिक संदेशों से भरा हुआ भी है। अपने इस फैसले से भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि वह केवल वर्तमान की राजनीति नहीं, बल्कि आने वाले दशकों की सियासी संरचना भी गढ़ रही है। नितिन नवीन को राष्ट्रीय जिम्मेदारी देकर एक दूरगामी संदेश दिया है।

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ, मध्य प्रदेश में मोहन यादव को सत्ता की बागडोर सौंपकर राजनीतिक गलियारे नई चर्चा छेड़ने वाली भाजपा ने फिर एक ऐसा फैसला लिया है, जिसने राजनीतिक पंडितों को बहस का नया मुद्दा दे दिया है। 45 वर्ष के नितिन नबीन को पार्टी का कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर भाजपा ने साफ कर दिया है कि उसकी नजर सिर्फ अगले चुनाव पर नहीं, बल्कि आने वाले वर्षों की राजनीति पर टिकी है। यह फैसला जितना संगठनात्मक है, उतना ही राजनीतिक और सामाजिक संदेशों से भरा हुआ भी है।

अपने इस फैसले से भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि वह

केवल वर्तमान की राजनीति नहीं, बल्कि आने वाले दशकों की सियासी संरचना भी गढ़ रही है। नितिन नवीन को राष्ट्रीय जिम्मेदारी देकर एक दूरगामी संदेश दिया है।

अनुभव बनाम ऊर्जा की बहस

पार्टी के भीतर इस पद के लिए लगभग दो दर्जन ऐसे नेता दावेदारी में थे, जिनका अनुभव, कद और राष्ट्रीय पहचान नितिन नबीन से कहीं बड़ा माना जाता रहा है। इनमें केंद्रीय मंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री और लंबे समय से संगठन में सक्रिय चेहरे शामिल थे।

इसके बावजूद नेतृत्व ने अनुभव के बजाय ऊर्जा, भविष्य की संभावना और दीर्घकालिक रणनीति को प्राथमिकता दी। यह भाजपा की उस सोच को रेखांकित करता है, जिसमें संगठन को एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है–जहां अगली पीढ़ी को समय रहते तैयार किया जाता है।

विपक्ष के लिए अप्रत्यक्ष चुनौती

नितिन नवीन की उम्र अपने आप में एक राजनीतिक वक्तव्य है। जिस समय विपक्ष के प्रमुख चेहरे उम्र के छठे और सातवें दशक में हैं, उसी दौर में भाजपा ने अपेक्षाकृत युवा नेता को राष्ट्रीय नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया है। यह तुलना स्वाभाविक रूप से विपक्ष के सामने खड़ी हो जाती है और नेतृत्व के भविष्य को लेकर सवाल उठाती है। भाजपा का यह कदम युवा मतदाताओं से संवाद स्थापित करने की रणनीति का भी हिस्सा माना जा रहा है।

संगठनात्मक पृष्ठभूमि और भरोसा

नितिन नबीन का राजनीतिक सफर छात्र राजनीति से शुरू होकर संगठनात्मक जिम्मेदारियों तक फैला है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और भारतीय जनता युवा मोर्चा के माध्यम से उन्होंने जमीनी राजनीति को करीब से समझा। बिहार सरकार में मंत्री के रूप में प्रशासनिक अनुभव और संगठन में प्रभारी की भूमिका निभाते हुए चुनावी सफलता–इन दोनों ने उन्हें नेतृत्व की नजर में

विश्वसनीय बनाया। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में संगठनात्मक जिम्मेदारी निभाना इस भरोसे को और मजबूत करता है।

बिहार से राष्ट्रीय मंच का सफर

इस नियुक्ति का एक सामाजिक और क्षेत्रीय संदर्भ भी है। बिहार जैसे राज्य से राष्ट्रीय स्तर पर उभरता नेतृत्व पार्टी के उस दावे को मजबूत करता है कि संगठन केवल कुछ चुनिंदा क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। बिहार भाजपा के कार्यकर्ताओं में इसे सम्मान और गौरव के रूप में देखा जा रहा है, वहीं यह संदेश भी जा रहा है कि क्षेत्रीय राजनीति से राष्ट्रीय नेतृत्व तक का रास्ता खुला है।

भविष्य की पटकथा और निष्कर्ष

भाजपा के इतिहास में कार्यकारी अध्यक्ष की भूमिका को अक्सर पूर्णकालिक अध्यक्ष की तैयारी के चरण के रूप में देखा गया है। इस लिहाज से नितिन नवीन की ताजपोशी केवल वर्तमान जिम्मेदारी नहीं, बल्कि भविष्य की संभावना भी है। उनके सामने चुनौती दोहरी है–एक ओर संगठन में नई ऊर्जा भरना, दूसरी ओर आगामी चुनावों में पार्टी की रणनीति को प्रभावी ढंग से जमीन पर उतारना।

नितिन नबीन का चयन किसी एक व्यक्ति का उदय भर नहीं है, बल्कि भाजपा की उस राजनीतिक सोच का प्रतीक है, जो दीर्घकालिक योजना, नेतृत्व की निरंतरता और युवा भारत की आकांक्षाओं को केंद्र में रखती है।

यह फैसला विपक्ष के लिए चेतावनी और कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा–दोनों है। अब निगाहें इस पर टिकी हैं कि यह युवा नेतृत्व आने वाले वर्षों में पार्टी की उम्मीदों और देश की राजनीति की दिशा को किस तरह आकार देता है।

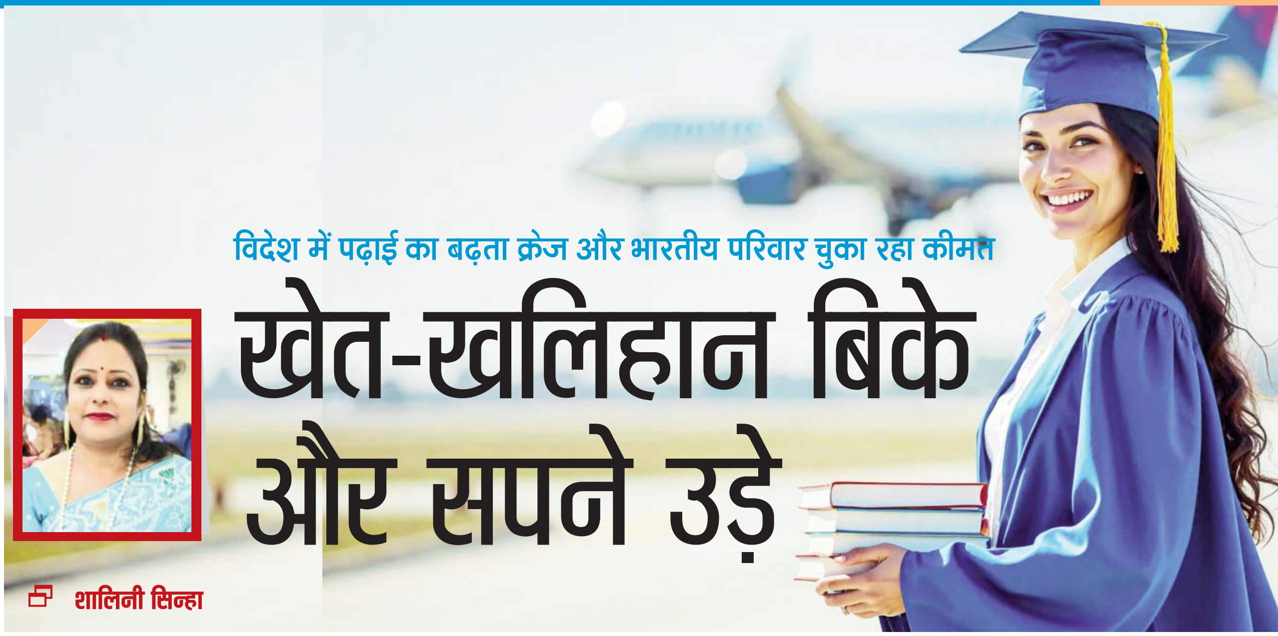

विदेश में पढ़ाई का बढ़ता क्रेज और भारतीय परिवार चुका रहा कीमत

खेत-खलिहान बिके और सपने उड़े

शालिनी सिन्हा

कभी विदेश जाकर पढ़ना विशिष्ट वर्ग या छात्रवृत्ति पाने वालों तक सीमित था। आज तस्वीर उलट है। संपन्न परिवारों के साथ-साथ मध्यम वर्ग और ग्रामीण पृष्ठभूमि के परिवार भी बच्चों के भविष्य की उम्मीद में घर-बार,जमीन-जायदाद व खेत-खलिहान तक बेचने को मजबूर हैं। बेहतर शिक्षा, वैश्विक एक्सपोजर और ऊंचे वेतन की चाह ने विदेश पढ़ाई को सामाजिक प्रतिष्ठा का पैमाना बना दिया है।

देश में अवसरों की कमी, बाहर की चमक

भारत में सरकारी नौकरियों की सीमित संख्या और निजी क्षेत्र में अस्थिरता ने युवाओं को असमंजस में डाला है। चुनिंदा संस्थानों से निकलने वालों को छोड़ दें तो अधिकांश युवाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण रोजगार की राह कठिन है। स्टार्टअप संस्कृति में सुधार के प्रयास हुए हैं, पूंजी,जोखिम प्रबंधन व असफलता के बाद पुनर्वास जैसी संरचनात्मक चुनौतियां बनी हुई हैं। ऐसे में विदेश की डिग्री को सुरक्षित भविष्य की गारंटी मान लिया गया है। विदेश जाने वाले अधिकांश छात्र पढ़ाई के साथ-साथ खर्च उठाने के लिए अंशकालिक या निम्न श्रेणी के काम करते हैं। परिणाम स्वरूप पढ़ाई, रिस्किलिंग और अपस्किलिंग के लिए समय सीमित रह जाता है। आय का बड़ा हिस्सा किराया, परिवहन, बीमा और दैनिक खर्च में निकल जाता है। बचत कम होने से न तो भारत में पूंजी निवेश संभव होता है, न ही सहज वापसी।

रेमिटेंस का दबाव और वापसी का डर

परिवारों ने जो कर्ज.लिया, उसकी भरपाई की अपेक्षा छात्रों पर बनी रहती है। नियमित रेमिटेंस भेजने का दबाव बढ़ता है। वहीं, अपेक्षित सफलता न मिलने पर भारत लौटने की सामाजिक झिझक भी आड़े आती है–'विदेश से लौटना असफलता' का ठप्पा डर बन जाता है। कई देशों में निम्न दर्जे के कॉलेजों की भरमार है, जिनकी मान्यता और प्लेसमेंट दावे वास्तविकता से मेल नहीं खाते। प्रवेश प्रक्रियाओं में पारदर्शिता की कमी, बढ़ती फीस और एजेंट-आधारित दाखिलों ने जोखिम बढ़ाया है। तेज तकनीकी बदलावों के दौर में कौशल को लगातार अपडेट करना अनिवार्य है, पर व्यावहारिक चुनौतियां इसे कठिन बना देती हैं।

भारतीय परिवारों की धारणा और यथार्थ

यह मान्यता गहरी है कि विदेश पढ़ाई से भविष्य सुरक्षित हो जाता है। जबकि हकीकत अधिक जटिल है–हर डिग्री रोजगार की गारंटी नहीं, और हर बाजार समान अवसर नहीं देता। भारत में निजी क्षेत्र की चुनौतियाँ और सरकारी नौकरियों की कठिन प्रवेश प्रक्रिया इस धारणा को और मजबूत करती हैं। **विदेश पढ़ाई न तो पूर्ण समाधान है, न ही स्वतः** जोखिम। आवश्यक है–संस्थान की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता, कुल लागत,रोजगार-नीतियां व वैकल्पिक योजनाओं का ठोस आकलन। साथ ही देश में कौशल-आधारित शिक्षा, अप्रेंटिसशिप, स्टार्टअप समर्थन व सुरक्षित फेल्योर-मैकेनिज्म को मजबूत करना समय की मांग है। तभी सपनों की उड़ान खेत-खलिहान की कुबार्नी पर नहीं,ठोस विकल्पों पर टिकी होगी।

भारतीय परिवेश में लाभ

अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर और बहुसांस्कृतिक अनुभव।
कुछ क्षेत्रों में अत्याधुनिक शोध, इंफ्रास्ट्रक्चर और उद्योग-संपर्क।
वैश्विक नेटवर्किंग और चुनिंदा सेक्टरों में बेहतर वेतन अवसर।

भारतीय परिवेश में नुकसान

भारी वित्तीय बोझः शिक्षा ऋण, संपत्ति बिक्री और लंबे समय तक कर्ज।

कौशल-विकास में बाधाः काम और पढ़ाई का असंतुलन।

मानसिक दबावः अपेक्षाएं, रेमिटेंस और अनिश्चित भविष्य।

'ब्रेन ड्रेन' और वापसी में सामाजिक असहजता।

निम्न गुणवत्ता वाले संस्थानों का जोखिम और डिग्री का सीमित मूल्य।

पीढ़ियों की भक्ति और राष्ट्रभक्ति का वह नेतृत्व, जो कह रहा है-अब नहीं सहेंगे गुलामी के निशान

-योगी आदित्यनाथ

योगी आदित्यनाथ बने हिंदुत्व के प्रहरी

बाबरी से ज्ञानवापी तक गुलामी के हर निशान का होगा अंत

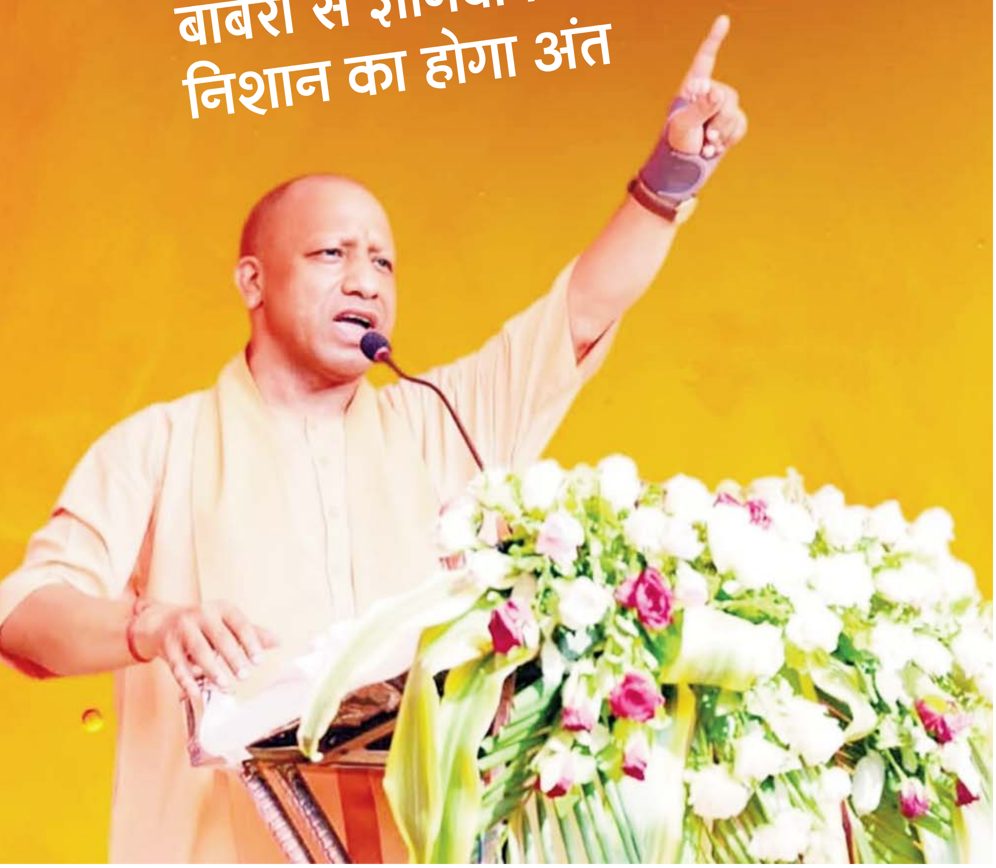

रीना एन सिंह

एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट

भारत केवल भूमि का टुकड़ा नहीं बल्कि हजारों वर्षों की दैवीय चेतना, गौरव, सभ्यता और आस्था का विराट प्रतीक है, जहां हर कण में देवत्व की ऊर्जा धड़कती है, इतिहास इस बात की चर्चा नहीं करता की कौन सा राज्य या राजा सबसे धनवान था, बल्कि इतिहास उसे स्वर्ण अक्षरों मे अंकित करता है की किस राजा ने अपनी संस्कृति , देश और धर्म की रक्षा के लिए क्या क्या किया ? कितनी लड़ाइयां लड़ी और कितना बलिदान और त्याग दिया। जो मानव संस्कृति अपने इतिहास को संजो कर नहीं रखती वह समुदाय और संस्कृति भविष्य से मिट जाती है। हमारे देश की इसी पवित्र धरती पर विदेशी आक्रमणकारियों ने तलवार और अत्याचार के बल पर मंदिर नष्ट किए, संस्कृति को कुचलने की कोशिश की ताकि हमारा समूल नष्ट हो जाये और हमारी पराजय के ऊपर अपने अहंकार का झंडा गाड़ने के हमारे मुख्य धार्मिक स्थलों पर तथाकथित 'मस्जिदें' खड़ी कीं, जो किसी उपासना के स्थल नहीं बल्कि खुल्लम-खुल्ला विजय-स्मारक थे। बाबरी, शाही ईदगाह और ज्ञानवापी जैसे स्थल इस बात के जीवंत साक्ष्य हैं कि कैसे आक्रमणकारी यह संदेश देना चाहते थे कि उन्होंने हिंदू आत्मा को झुका दिया है।

1528 में मीर बाकी द्वारा राम जन्मभूमि पर रामलला के मंदिर को ध्वस्त कर बनाई गई संरचना नमाज की जगह नहीं थी, बल्कि हिंदू समाज के खिलाफ सैनिक विजय की घोषणा थी। यह घाव पांच सौ वर्षों तक हमारे हृदय में धधकता रहा, लेकिन सनातन समाज कभी थका नहीं, कभी टूटा नहीं, उसके संत, साधु, राजपूत, मराठा, नागा साधु हर युग में धर्म की

रक्षा के लिए खड़े रहे और इसी सत्याग्रह का प्रथम निर्णायक पड़ाव तब आया जब राम मंदिर पुनः उसी स्थान पर भव्य रूप में स्थापित हुआ और यह संकेत मिला कि अब इतिहास करवट ले चुका है और गुलामी के स्मारक टिक नहीं पाएंगे।

इसी क्रम में मथुरा की कृष्ण जन्मभूमि पर बना शाही ईदगाह का घाव और भी गहरा है। जहां देवकी-वासुदेव ने जन्म दिया, जहां कंस का अत्याचार समाप्त हुआ, उसी पवित्र स्थान पर औरंगजेब ने मंदिर गिरवाकर मस्जिद बनवाई यह इबादत की जगह नहीं, हिंदुओं को मनोवैज्ञानिक रूप से तोड़ने की रणनीति थी, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां अपने ही देवताओं के जन्मस्थल पर पराई सत्ता का निशान देखें। यही रणनीति काशी में भी अपनाई गई, जहां विश्वनाथ जो भारत की आत्मा का केंद्र है को नष्ट कर ज्ञानवापी मस्जिद की दीवारें खड़ी की गईं, ताकि औरंगजेब यह घोषणा कर सके कि 'काशी भी मेरी तलवार की पहुंच में थी।' लेकिन सत्य कभी दबता नहीं, और आज वही सत्य सामने है ज्ञानवापी में शिवलिंग अवस्थित है; यह प्रमाण किसी तर्क या बहस से परे है कि वहां पहले क्या था।

यह संघर्ष अकेले किसी न्यायालय या आंदोलन का संघर्ष नहीं था; यह 550 वर्षों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही धधकती आस्था का संघर्ष था, जिसे तीन पीढ़ियों की गोरखनाथ परंपरा ने भारत के चेतन मानस में जीवित रखा। महंत दिग्विजयनाथ ने ब्रिटिश शासन और मुस्लिम लीग दोनों के विरुद्ध हिंदू चेतना का ध्वज उठाया; वे गोरखनाथ पीठ से राष्ट्रवाद, हिंदू स्वाभिमान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवाज को संगठित रूप से स्थापित करने वाले प्रथम महंत थे जिन्होंने हिंदू समाज को यह याद दिलाया कि बाबरी और अन्य अपहृत स्थलों का मुद्दा केवल धार्मिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व का प्रश्न है। उनके बाद महंत अवेद्यनाथ ने इस संघर्ष को एक संगठित जनांदोलन में परिवर्तित किया; राम जन्मभूमि आंदोलन को उन्होंने निर्णायक वैचारिक आधार दिया और हिंदू समाज को यह बताया कि सत्य और प्राचीन धरोहरों की पुनर्स्थापना केवल अदालतों की लड़ाई नहीं बल्कि जन-जागरण की पुकार है। वे राम जन्मभूमि आंदोलन के आध्यात्मिक स्तंभ थे जिन्होंने एक पीढ़ी को गुलामी के प्रतीकों को पहचानने की दृष्टि दी,और आज इस परंपरा का तीसरा और सबसे प्रखर स्वर महंत योगी आदित्यनाथ के रूप में सामने है, जो तप, त्याग, अनुशासन और अदम्य राष्ट्रवादी साहस के आधुनिक प्रतीक बनकर खड़े हुए हैं। योगी वह नेतृत्व हैं जो हिंदुत्व को केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि प्रशासनिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक शक्ति में परिवर्तित करते हैं। वे आक्रमणकारियों के सत्य को छिपाते नहीं, तुष्टीकरण की राजनीति से समझौता नहीं करते, अपराधियों के सामने न झुकने वाले और सनातन की प्रतिष्ठा के लिए निडरता से खड़े होने वाले नेता हैं।

जब भारत आज अपने इतिहास से जुड़े झूठे नैरेटिव को हटाने, गुलामी के निशानों को मिटाने और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की ओर बढ़ रहा है, तब देश एक ऐसे नेतृत्व की तलाश में है जो बिना भय के सत्य को कह सके, जो इतिहास को विकृतियों से मुक्त कर सके, जो समाज में हिंदू आत्मविश्वास को पुनर्जीवित कर सके और इस युग में ऐसा चेहरा योगी आदित्यनाथ ही हैं, जिनमें तीन पीढ़ियों की तपस्वी परंपरा, राष्ट्रवादी चेतना और हिन्दू गौरव एक साथ साकार होता है। पूरे राष्ट्र का मानस आज समझ रहा है कि यदि राम मंदिर पुनरुत्थान का युग संभव हुआ, यदि कृष्ण जन्मभूमि और ज्ञानवापी जैसे सत्य आज पुनः प्रकट हो रहे हैं, तो यह इसलिए कि भारत की आत्मा फिर से जाग उठी है और इस पुनर्जागरण को एक स्थिर, सशक्त और तपस्वी नेतृत्व की आवश्यकता है।

इसलिए आज भारत का भविष्य केवल आर्थिक विकास का मुद्दा नहीं बल्कि सांस्कृतिक पुनर्स्थापना का संकल्प बन चुका है, क्यूंकि आर्थिक रूप से संपन्न तो हम सदा थे परन्तु समय के साथ जैसे जैसे हमारी धार्मिक संस्कृति पर आघात हुआ सबसे पहले हम आर्थिक रूप से कमजोर हो गए क्यूंकि हमला हमारी जड़ों पर हुआ, हमारा धर्म हमारी संस्कृति ही हमारी नींव है 21वीं सदी भारत की सनातनी पहचान की वापसी की सदी है और इस महान यात्रा का नेतृत्व उसी के हाथ मे होना चाहिए जो न डरता है, न झुकता है, न बिकता है जो राष्ट्र को केवल शासन नहीं, बल्कि दिशा देता है। महंत दिग्विजयनाथ की ज्वाला, महंत अवेद्यनाथ का संकल्प और योगी आदित्यनाथ की प्रखरता मिलकर आज पूरे भारत को पुकार रही है कि गुलामी के प्रतीक ढहेंगे, सत्य प्रकट होगा, मंदिर पुनर्स्थापित होंगे और भारत अदम्य हिंदुत्व के साथ खड़ा होगा और आर्थिक रूप से सशक्त होगा क्योंकि इस जागरण का सेनापति वही है जिसके नेतृत्व में राष्ट्र स्वयं को सुरक्षित, गौरवान्वित और पुनर्जीवित महसूस करता है, और वह नाम है: योगी आदित्यनाथ।

यूपी की राजनीति में भाजपा की नई चाल

पंकज चौधरीः नया नेतृत्व, नया समीकरण

भास्कर मिश्रा

उत्तर प्रदेश की राजनीति में संगठनात्मक बदलाव कभी साधारण नहीं होते। विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी द्वारा केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने की चर्चा इसी राजनीतिक गणित का हिस्सा है। यह फैसला केवल नेतृत्व परिवर्तन नहीं, बल्कि जातीय संतुलन, क्षेत्रीय समीकरण और विपक्ष की रणनीति को चुनौती देने की एक सुविचारित चाल के रूप में देखा जा रहा है। समाजवादी पार्टी लंबे समय से पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक फामूर्ले को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करती रही है। ऐसे में भाजपा का पंकज चौधरी को आगे करना सीधे तौर पर पिछड़े वर्गों, खासकर कुर्मी समाज, को साधने का प्रयास है। उत्तर प्रदेश में कुर्मी मतदाता न सिर्फ संख्या में प्रभावी हैं, बल्कि कई क्षेत्रों में चुनावी नतीजों को निर्णायक रूप से प्रभावित करते हैं। एनडीए की सहयोगी पार्टी अपना दल पहले से ही इस वर्ग में सक्रिय है, लेकिन भाजपा अब खुद इस सामाजिक आधार को और मजबूत करना चाहती है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहले ही गोरखपुर के जरिए पूर्वांचल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पंकज चौधरी मतलब स्पष्ट संदेश

पंकज चौधरी के प्रदेश अध्यक्ष बनने का स्पष्ट संकेत है कि भाजपा आने वाले चुनाव में पूर्वांचल को सत्ता और संगठन दोनों में केंद्र में रखना चाहती है। महाराजगंज और आसपास के जिलों में पंकज चौधरी की मजबूत पकड़ पार्टी के लिए जमीनी ताकत का काम कर सकती है। भाजपा के सामने एक बड़ी चुनौती संगठन और सरकार के बीच संतुलन बनाए रखने की रही है। पंकज चौधरी की छवि एक ऐसे नेता की है जो सत्ता में रहते हुए भी संगठन

से कटे नहीं। पार्टी कार्यकताओं के बीच उनकी स्वीकार्यता, विवादों से दूरी और जिम्मेदारियों के सफल निर्वहन ने उन्हें 'सेफ चॉइस' बना दिया है।

आरएसएस से नजदीकियां व स्वीकार्यता

राजनीतिक गलियारों में यह भी चर्चा है कि पंकज चौधरी की आरएसएस से नजदीकी और पार्टी कैडर के बीच विश्वसनीयता उन्हें शीर्ष नेतृत्व के भरोसेमंद नेताओं में शामिल करती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का बिना प्रोटोकॉल उनके घर जाना केवल व्यक्तिगत सम्मान नहीं था, बल्कि पूर्वी उत्तर प्रदेश और कुर्मी समाज के लिए एक राजनीतिक संकेत भी माना गया। भाजपा पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि वह अगड़ी जातियों की पार्टी है। पंकज चौधरी जैसे पिछड़े वर्ग के अनुभवी नेता को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर पार्टी न सिर्फ इस धारणा को चुनौती देना चाहती है, बल्कि विपक्ष के सामाजिक न्याय के दावे को भी कमजोर करना चाहती है।

मुश्किल दौर में भी नहीं छोड़ा साथ

पंकज चौधरी का राजनीतिक सफर पार्षद से केंद्रीय मंत्री तक का रहा है। हार के दौर में भी पार्टी ने उनका साथ नहीं छोड़ा और यही निरंतरता आज उनके पक्ष में जाती है। हालांकि सवाल यह है कि क्या संगठन की यह रणनीति जमीनी स्तर पर वोटों में तब्दील हो पाएगी? एक बात तय है कि पंकज चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष बनाना भाजपा के लिए केवल नेतृत्व परिवर्तन नहीं, बल्कि 2027 की लड़ाई से पहले सामाजिक और राजनीतिक मोचेबंदी की शुरूआत है।

केशव की अगुवाई में मिली अपार सफलता

विधानसभा चुनाव 2017 से ठीक पहले भाजपा ने उत्तर प्रदेश की संगठनात्मक कमान केशव प्रसाद मौर्य को सौंपी थी। उन्होंने लक्ष्मीकांत वाजपेयी का स्थान लिया था, जिनके नेतृत्व में पार्टी ने 2014 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश से रिकॉर्ड 71 सीटें जीती थीं। केशव मौर्य के नेतृत्व में भाजपा ने 2017 के विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए 325 सीटों के साथ सरकार बनाई

पिछला अनुभव और सफलता

पूर्व प्रदेश अध्यक्षः केशव प्रसाद मौर्य

2014 लोकसभाः 71 सीटें

2017 विधानसभाः 325 सीटें

निर्णायक वोट बैंकः जाट, मौर्य, ओबीसी

मौर्य समाज यूपी में तीसरा सबसे बड़ा जाति समूह

पश्चिमी यूपी के लगभग 100 सीटों पर प्रभाव

और मौर्य को उपमुख्यमंत्री बनाया गया। उत्तर प्रदेश की सियासत में मौर्य वोट बैंक की ताकत काअंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि राज्य के करीब 100 सीटों पर इसका सीधा प्रभाव देखा जाता है। उत्तर प्रदेश में यादव और कुर्मियों के बाद ओबीसी में तीसरा सबसे बड़ा जाति समूह मौर्य समाज का है। इसे शाक्य, सैनी, कुशवाहा, कोइरी, काछी के नाम से भी जाना जाता है। भाजपा को 2014 के लोकसभा, 2017 के विधानसभा और 2019 के लोकसभा चुनाव में इस वोट बैंक से बहुत फायदा मिला।

असंतोष की काट बने महेंद्रनाथ पांडेय

ब्राह्मण समुदाय का असंतोष और महेंद्र नाथ पांडेय को कमान राजनीतिक जानकारों का मानना है कि योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद प्रदेश की कुछ अगड़ी जातियों, विशेषकर ब्राह्मण समुदाय, में सरकार और पार्टी के प्रति असंतोष की जो स्थिति बन रही थी। उसे साधने के लिए महेंद्र नाथ पांडेय को संगठन की कमान सौंपी गई थी। कहा जाता है कि ब्राह्मण मतदाता योगी सरकार में स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहा था। गोरखपुर में बसपा विधायक विनय शंकर तिवारी के आवास पर छापेमारी और रायबरेली में ब्राह्मण समुदाय के पांच लोगों की जिंदा जलाकर हत्या जैसी घटनाओं ने इस असंतोष को और गहरा कर दिया था।

... तब भूपेंद्र चौधरी को आगे किया

रायबरेली की घटना को लेकर तो सरकार के भीतर ही कई मंत्री आमने-सामने आ गए थे। जाट वोट और किसानों को साधने के लिए भूपेंद्र सिंह चौधरी को कमान इसी क्रम में भाजपा ने उप्र के पंचायती राजमंत्री रहे भूपेंद्र सिंह चौधरी को राज्य इकाई का नया अध्यक्ष नियुक्त किया था। उन्होंने स्वतंत्र देव सिंह का स्थान लिया था। 2024 के लोकसभा चुनावों को देखते हुए यह पद बेहद अहम माना जा रहा था,जिसके लिए उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व राज्यसभा सदस्य बी.एल. वर्मा जैसे दिग्गजों के नाम भी चर्चा में थे। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि पश्चिमी यूपी में किसानों और जाट समाज की नाराजगी को दूर करने के लिए भाजपा ने भूपेंद्र सिंह चौधरी पर दांव लगाया था।

आखिर फट ही पड़ा असंतोष का ज्वालामुखी

भाजपा ब्राह्मण विधायकों की बैठक, और गरमा गई सियासत!

बीते दिसंबर महीने की गलन और कोहरे भरी धुंध के बीच भाजपा के ब्राह्मण विधायकों के एक सहभोज व सामूहिक बैठक से सियासी गलियारे में जो गर्मी पैदा हुई उसने पार्टी के दिग्गजों को पसीने पसीने 'तर-बतर' कर दिया।

शिवा शंकर पांडेय

आखिरकार, भारतीय जनता पार्टी के भीतर ब्राह्मण राजनीति की उपेक्षा के 'असंतोष का ज्वालामुखी' फटकर बाहर निकल ही आया। साल जाते -जाते दिसंबर महीने के आखिरी सप्ताह में सहभोज के बहाने ब्राह्मण विधायकों की हुई एक बैठक ने यूपी की राजनीति में तूफान ला दिया। इतना ही नहीं, पार्टी के ओहदेदारों के माथे पर चिंता की लकीरें गहरा गईं। आनन फानन चचाओं के बाजार ने गरमी पकड़ ली। राजनीति के गलियारे में कयास लगाए जाने लगे कि अब क्या होगा ? प्रदेश के भाजपा मुखिया

पंकज चौधरी को यह सार्वजनिक रूप से कहना पड़ा कि 'यह गलत बात है, आइंदा ऐसी हरकतें बर्दाश्त नहीं की जाएगी, इसे अनुशासनहीनता माना जाएगा और कार्रवाई भी होगी।' दरअसल, सर्द मौसम और विधान मंडल दल की चल रही बैठक के बीच कुशीनगर के विधायक पंचानंद पाठक के लखनऊ आवास पर बीते 23 दिसंबर को यह बैठक सहभोज के नाम पर हुई। खास बात यह कि इस अहम बैठक में पूर्वांचल और बुंदेलखंड क्षेत्र से जुड़े 40 से ज्यादा विधायकों का जुटान हुआ। इनमें एमएलए और एमएलसी दोनों शामिल हुए। एक बात और गौर करने की है कि इस बैठक में न सिर्फ भाजपा बल्कि और अन्य भी दलों के विधायक शामिल हुए थे।

सहभोज से सियासी भूचाल तक

इस बैठक के बाद 'सियासी भूचाल' आ गया। मुख्यमंत्री के ओएसडी सरवन बघेल ने आनन फानन विधायक पंचानंद को फोन किया। बैठक की बाबत उनसे विस्तार से जानकारी ली। उधर, भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी से लेकर ब्राह्मण बिरादरी के चेहरा माने जाने वाले प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक को दिल्ली तलब कर लिया गया। भाजपा के वरिष्ठ नेता रहे रमापति त्रिपाठी को पार्टी ने डैमेज कंट्रोल में लगाया।

भाजपा के ब्राह्मण विधायकों की बैठक पर चेतावनी, बेचैनी और दोहरे मानदंड की जो तस्वीर बनकर सामने आई, उसने एक गंभीर विमर्श भी पैदा कर दिया। भाजपा के एक पूर्व जिलाध्यक्ष नाम न छापने की शर्त पर दबी जुबान अपना दर्द बयां करते हैं। चर्चा छिड़ने पर वे 'विचार सेतु' से कहते हैं - 'जब दूसरी जातियों के प्रतिनिधि सम्मेलन करें तो सामाजिक संवाद, लेकिन भाजपा के ब्राह्मण विधायक सहभोज कर लें, कुटुंब बना लें तो हाय तौबा?' वे पलटकर सवाल करते हैं -'आखिर इस 'हाय-तौबा' की असली वजह क्या है?' यूं समझिए कि उत्तर प्रदेश की राजनीति एक बार फिर जातीय विमर्श के केंद्र में आ गई है। इस बार वजह कोई बड़ा आंदोलन नहीं, कोई सरकार-विरोधी मोर्चा नहीं, बल्कि भाजपा के ब्राह्मण विधायकों की एक बैठक और सहभोज है। पार्टी के एक पूर्व पदाधिकारी सवाल करते हैं - बैठक तो शांतिपूर्ण थी, जब बातचीत, संगठन और संवाद तक सीमित थी तो इतने हंगामे की जरूरत कहां से पैदा हो गई? राजनीति के गलियारे, खासकर भाजपा के 'अंदरखाने' बड़ा बवाल क्यों पैदा हो गया? नव नियुक्त पंकज चौधरी की सप्ताह भर में दो बार 'चेतावनी' ने इस पूरे घटनाक्रम को और ज्यादा तूल पकड़ा दिया। यूपी के पार्टी मुखिया पंकज चौधरी का बयान कि 'भाजपा में जातीय आधार पर कोई गुटबंदी स्वीकार नहीं की जाएगी।' सवाल यह है कि क्या यह चेतावनी केवल ब्राह्मण विधायकों के लिए थी? क्या पार्टी में बाकी जातीय समूहों

की बैठकों पर भी ऐसी ही सख़्ती दिखाई जाती है? राजनीतिक गलियारों में यह बयान अनुशासन से ज्यादा संदेश के रूप में देखा गया।

सहभोज बन गई पॉलिटिकल साजिश?

ब्राह्मण विधायकों की इस बैठक को लेकर कुछ नेताओं और विश्लेषकों ने इसे 'जातीय गोलबंदी' करार दे दिया। लेकिन, तथ्य यह भी गौरतलब है कि न कोई अलग मंच बना न कोई प्रस्ताव पारित हुआ, न कोई नेतृत्व परिवर्तन की मांग तो फिर सवाल उठता है कि सिर्फ सहभोज और संवाद से सियासत में आग क्यों लग गई?

जातीय सम्मेलन: किसे छूट, किसे चेतावनी?

समय गवाह है कि उत्तर प्रदेश में यादव सम्मेलन होते हैं, कुर्मी महासभाएं होती हैं,जाट पंचायतें होती हैं,निषाद,पासी,मौर्य, लोधी आदि समाज के भी आयोजन होते हैं। अक्सर इन आयोजनों में मंच से राजनीतिक संकेत दहाड़ कर दिए जाते हैं, खुलेआम दलों को समर्थन या विरोध की बातें होती हैं। लेकिन, इन्हें सामाजिक एकजुटता कहा जाता है। वहीं, भाजपा के ब्राह्मण विधायक आपस में बैठे तो इसे अनुशासनहीनता क्यों करार किया जा रहा है?

भाजपा की जातीय राजनीति: एक अंतर्विरोध

भाजपा आधिकारिक तौर पर जातिवाद से ऊपर उठने की बात करती है। 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा देती है, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि टिकट वितरण में जातीय संतुलन, मंत्रिमंडल में सामाजिक प्रतिनिधित्व, संगठन में जातीय समीकरण मौजूद दिखता है। तो फिर सवाल है अगर जाति हकीकत है, तो संवाद अपराध क्यों?

ब्राह्मण: न सत्ता में, न निर्णायक, फिर डर क्यों?

उत्तर प्रदेश में मौजूदा राजनीतिक हालात देखें तो सत्ता की धुरी पिछड़ा और गैर-यादव समीकरण पर टिकी है। ब्राह्मण न निर्णायक वोट बैंक हैं, न सरकार की दिशा तय कर रहे हैं, इसके बावजूद ब्राह्मणों की किसी भी संगठित पहल से राजनीति में बेचैनी क्यों फैल जाती है? ब्राह्मण राजनीति में आज भी 'प्रतीकात्मक भय' बने हुए हैं, आखिर क्यों?

पंकज चौधरी का बयान: अनुशासन या संतुलन साधने की कोशिश?

पंकज चौधरी का बयान केवल चेतावनी नहीं, बल्कि एक संकेत के रूप में भी देखा गया। मैसेज यह भी बाहर निकलकर आया कि पार्टी किसी भी तरह के आंतरिक समूह को उभरने नहीं देना चाहती। खासकर ऐसा समूह, जिसे मीडिया तुरंत बड़ा बना सकता है। लेकिन, आलोचक कहते हैं कि यह संदेश एकतरफा था। क्योंकि यदि यही बात अन्य जातीय बैठकों पर भी समान रूप से कही जाती, तो विवाद शायद इतना नहीं बढ़ता।

विपक्ष को मिला मुद्दा, मीडिया को मसाला

इस पूरे प्रकरण में जहां एक तरफ विपक्ष को भाजपा पर 'सवर्ण पक्षपात' और 'डबल स्टैंडर्ड' का मुद्दा मिला, वहीं मीडिया को एक नया जातीय टकराव दिखने लगा। प्रमुख विपक्षी दल सपा के प्रमुख नेता शिवपाल यादव ने इसे असंतुष्ट विधायकों का उबाल बता डाला। गाजीपुर जिले के जमानिया में एक शोकसभा में शिरकत करने पहुंचे सपा नेता शिवपाल यादव ने भाजपा के असंतुष्ट विधायकों को खुलेआम न्योता दे डाला। असंतुष्ट ब्राह्मण विधायक सपा में आ जाएं, यहां इनका मान सम्मान होगा और इनकी बातें भी सुनी जाएंगी। उधर, कुछ टीवी चैनलों ने इसे ऐसे दिखाया, मानो भाजपा में कोई अंदरूनी विद्रोह पनप रहा हो, जबकि सच्चाई इससे कहीं अधिक साधारण ही थी।

ब्राह्मण राजनीति: वर्चस्व नहीं, हिस्सेदारी की बात

उलझाऊ राजनीतिक परिदृश्य के बीच यह भी समझना जरूरी है कि ब्राह्मण राजनीति वर्चस्व की नहीं, सम्मान, प्रतिनिधित्व, संवाद की बात कर रही है। वे वही अधिकार चाहते हैं, जो बाकी 'समाज' के लोगों को पहले से मिले हुए हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट के अपर मुख्य स्थायी अधिवक्ता रवि शंकर पांडेय दो टूक कहते भी हैं कि सहभोज पर हाय-तौबा क्यों?असल समस्या सहभोज नहीं, असल समस्या यह है कि ब्राह्मण समाज को राजनीति में या तो पूरी तरह चुप रहना चाहिए या फिर दोषी ठहराए जाने को भी सहज तरीके से स्वीकार कर लेना चाहिए। बीच का रास्ता स्वीकार्य नहीं।' उप्र जैसे महत्त्वपूर्ण सियासी राज्य से उठे इस राजनीतिक 'बवंडर' का अंदरूनी तौर पर कुछ न कुछ मतलब तो है ही। भले ही आग दिख न रही हो पर भीतर ही भीतर सुलग तो रही ही है। ज्ञानी कह गए हैं कि रात चाहे जितनी ज्यादा लंबी हो, पर रात की सुबह तो होती ही है। फिलहाल, भाजपा के भीतर मची इस हाय तौबा को यूं ही एकदम से अनदेखा भी नहीं किया जा सकता।

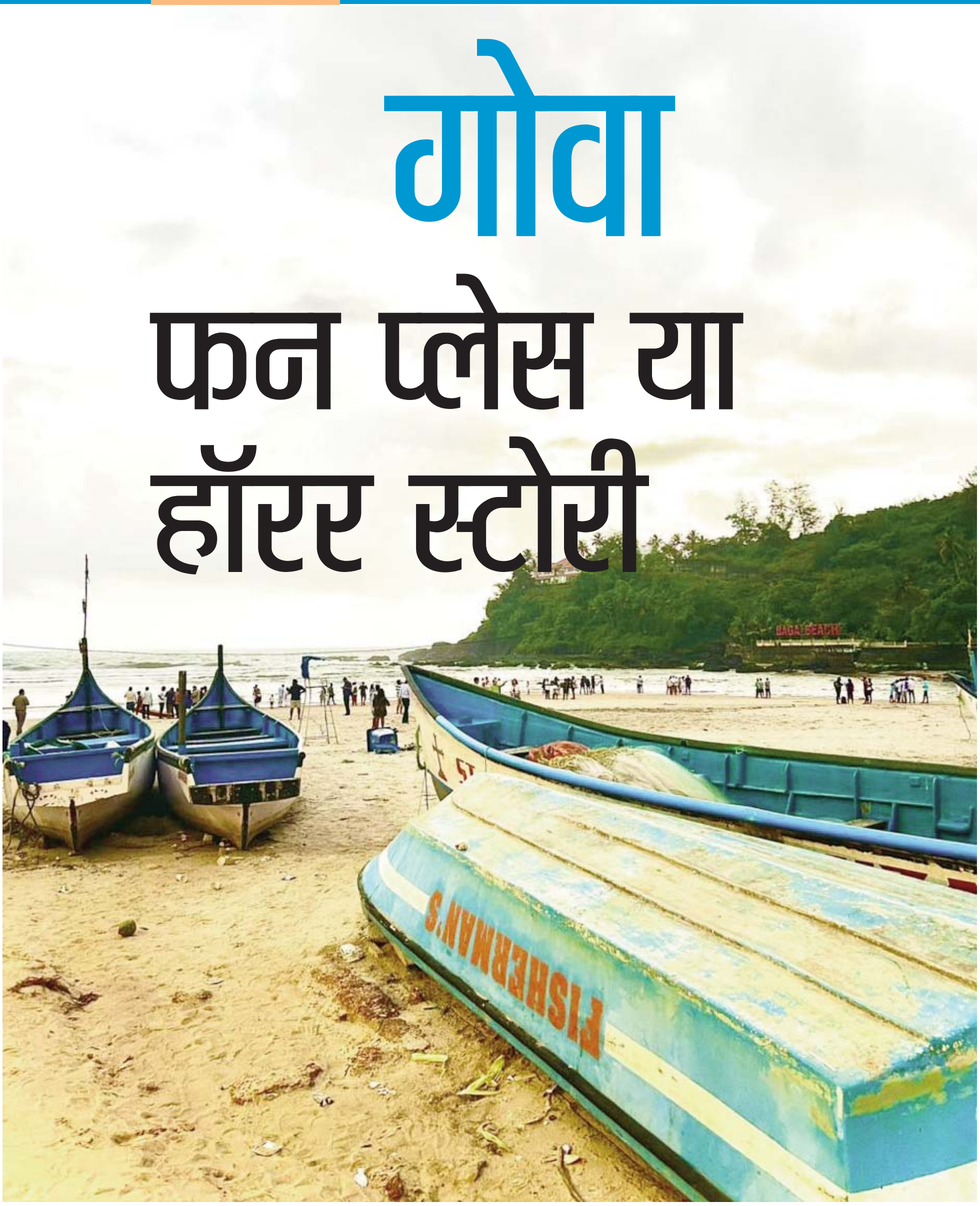

गोवा फन प्लेस या हॉरर स्टोरी

धीरेन्द्र सिंह

ट्रैवलिंग के दौरान आम से लेकर खास इंसान आखिर क्या उम्मीद रखता है? संभवतः एक दिल-दिमाग को फ्रेश कर देने वाला एहसास, सुरक्षित माहौल और ढेर सारी नई-नई अच्छी यादें। हालांकि हमेशा और हर जगह ये मिल पाना भी एक चैलेंज जैसा बन जाता है। कभी-कभी ट्रैवलिंग के दौरान ये आपकी खुद पैदा की हुई समस्या हो सकती है या आस-पास के माहौल से पनप सकती हैं। पिछले कुछ समय या यूं कहें सालों से भारत का गोवा विदेशी पर्यटकों के साथ ही देशी लोगों के लिए ट्रैवल डेस्टिनेशन बनकर सामने आया। मीडिल क्लास से भी गोवा को अपनी ट्रैवल लिस्ट में टॉप पर रख रहे हैं।

इन सबके बीच क्या आपको खबर लगी कि जिन सोशल मीडिया रिल्स को देखकर आप गोवा ट्रैवल ड्रीम पूरा करने निकले हैं, वो जरूरी नहीं की आपको उन वीडियो जितना ही मजा दें। गोवा को अमूमन दो हिस्सों में बांटा जाता है, एक साउथ वाला हिस्सा जहां लोग बस मस्त आराम करने पहुंते हैं। खासकर पार्टियों से दूर कुछ सुकून का वक्त। वहीं दूसरा है, नॉर्थ गोवा पार्टी, फन, मजा, शराब-नशा, सी फेस क्लब और लगभग हर कुछ किलोमीटर पर देर रात तक गलियों के क्लब में भी होने वाली पार्टी...

हर वर्ग के साथ आज के यूथ की पहली पसंद गोवा ट्रिप सबसे जरूरी है, वो चाहे इंडिया के किसी भी हिस्से में रहता हो। आप कुछ दिनों से जिस गोवा की चर्चा क्लब में आग और कई लोगों की मौत की वजह से सुन रहे हैं, ध्यान दीजिए तो वो काफी वक्त से अपनी बदनामी भी चीखता आ रहा है। कभी टैक्सी माफियाओं के नाम पर बवाल, कभी वॉटर स्पोर्ट्स के नाम पर स्कैम, नॉर्थ गोवा के बागा-वागाटोर बीच पर कुछ लड़कियों की अजीब सी हरकत और आपके फिसलते ही ट्रैप में फंसना। गोवा सोशल मीडिया रिल्स पर जितना ज्यादा चमकता हुआ दिखाई पड़ा है, वो उससे कहीं ज्यादा डार्क है। कह सकते हैं कि नॉर्थ गोवा के अंजुना बीच वाली ब्लैक सैंड से भी काला।

अब इन सबके बीच सवाल उठाता है कि इतनी सारी कमियों के बीच आखिर लोग गोवा क्या देखने और हासिल करने जा रहे हैं? कुछ निजी अनुभव से हासिल आपके सामने रख रहा हूं। जब आप गोवा के किसी एयरपोर्ट पर लैंड करते हैं, तो वहां आपको टैक्सी की समस्या का सामना करना होता है। टैक्सी माफियां वाले किस्सों ने आपको दिमाग में जो पिक्चर बना रखी है, वो अपने तय जगह पर पहुंचने से पहले क्लियर नहीं होती। अक्सर यंग ऐज के लोग गोवा के किसी भी हिस्से में उतरकर सबसे पहले नॉर्थ गोवा की तरफ भागते हैं। भागे भी क्यों न उनके हिसाब से असली जिंदगी तो वहीं बसती है। लगभग हर ठीक-ठीक होटल और हॉस्टल में आपको स्विमिंग पूल मिल जाएगा। मेरे वाले हॉस्टल में तो बहुत बड़ा था। वहीं बिना किसी ज्यादा

मेहनत के आपको शराब के ठेके पास में मिल जाएंगे। कहने की जरूरत नहीं जहां मैं रूका था, वहां अंदर ही बार था। ऐसा लगता था कि नॉर्थ गोवा में दिन शायद सिर्फ सोने के लिए होता है। वहां आपको सुबह से दोपहर तक कम ही लोग नजर आएंगे। शाम होने के बाद लोगों को आप नजर नहीं आएंगे, ऐसा इसलिए क्योंकि लगता है कि वहां इसका मतलब ज्यादा नशा ही है।

गोवा के होटल, हॉस्टल, सड़क हर जगह आपको बहुत आसानी से मदहोश होने के लिए सारा सामान मिल जाएगा। आश्चर्य कि बात ये है कि जिन जगहों पर आप रूकते हैं, वहां ऐसे नशे भी दिख जाते हैं, जिनके लिए सजा कम नहीं है। दूसरी चौंकाने की बात ये है कि ओनर्स को भी इन सब चीजों से कोई आपत्ति नहीं, जब तक आप उनकी प्रॉपर्टी को नुकसान न पहुंचाए। समुद्र के किनारे बसे इस खूबसूत स्टेट पर एक दाग और लग चुका है, वन नाइट स्टैंड का... नहीं ये स्टेट की गलती नहीं है। ये समस्या है, ऐसी मानसिकता के साथ वहां आने वालों की। विश्वास मानिए ज्यादातर सोलो ट्रैवलिंग से जुड़े हॉस्टलों में खुला खेल देखने को मिलता है। ये बात सिर्फ लड़कों या लड़कियों से जुड़ी नहीं है। ये उस नशे की जिम्मेदारी है, जो आधे दिन के बाद उनकी रगो में दौड़ने लगता है। इसके बाद शुरू होता है, अपनी हैसियत के मुताबिक फ्लर्टिंग का सिलसिला जो मुश्किल से कुछ घंटों में ही किसी से किसी के कमरे में जाकर थमता है। इसके लिए कोई किसी को पैसे नहीं देता, हां लेकिन उनके खुद के शहरों में छूटे लगभग हर पाटनर्स को धोखा जरूर मिलता है। इसी लोग फन नाइट या फन डे का नाम देते है, अपनी-अपनी सहूलियत के मुताबिक।

इसके बाद लोगों के बीच कुछ दिन का सफर शुरू होता है। चलो चले नॉर्थ गोवा की सैर पर... अच्छा क्या ही देखेंगे यहां? मैं घूमना आप पर छोड़ रहा हूं। फिलहाल आपको गोवा के उस डार्क साइड से रूबरू करा रहा हूं, जो कम ही जानने को मिलता है। यहां शाम होते ही मानो लोगों के लिए स्वर्ग के दरवाजे खुल जाते है। दिनभर सोने, घूमने, पीने और तमाम तरह की पर्सनल एक्टिविट करने के बाद लोग निकलते हैं, आफ्टर पार्टी करने। नॉर्थ गोवा में रूकने वाले आफ्टर पार्टी लेना का पता बखूबी जानते हैं। इसे कहते हैं 'चपोरा लेन'। सस्ते में हाई होने का एक और पता। ओपन बार, लाउड म्यूजिक, नशे में एक-दूसरे से टकराते लोग या आस-पास से गुजरते हुए कह लीजिए। दिल टूटने के बाद जैसे लोग गर्लफ्रेंड को आखिरी बार देखने की तमन्ना रखते हैं न ठीक वैसे ही हाई होने के बाद सुपर हाई होने के लिए लोग चपोरा लेन चले आते है। कई बार लोगों को उनका अपोजिट जेंडर यानि कुछ दिन का प्यार यहां से मिल जाता है।

नॉर्थ गोवा के बागा, कलंगुट, कैंडोलिम, अंजुना, वागाटोर जैसे तमाम बीच की बात की जाए तो मिलाजुला रिस्पॉन्स कह लीजिए। शायद सुकून पसंद इंसान ही इनमें से किसी

एक-दो जगह बैठकर अपनी शाम लहरों के साथ गुजारना चाहेगा। हां, यहां भी आपको कई तरह के स्कैम से बचने की जरूरत है। वहीं लड़की का चक्कर बाबू भईया, इसमें फंसे तो शायद पुलिस भी आपकी मदद न कर पाए। बस इतना ही कहा जा सकता है कि सर्तक रहिए और सुरक्षित रहिए।

गोवा को समझने के लिए आपको दो-चार दिन नहीं महीने देने पड़ेंगे। आपको समझना होगा कि आप गोवा के नब्ज छूने आए हैं, या आजकल का नया माहौल? आप गोवा की रेव पार्टियों का हिस्सा बनना चाहते हैं या समुद्र के बसे शहरों की हरियाली से भरी हुई गलियां। आप पर निर्भर करता है कि चमचमाती लाइट और नशे में झूमते लोग चुनेंगे या अपनी गाड़ी की खुली खिड़की के साथ सड़कों और पुरानी इमारतों के पते तलाशेंगे। आपने सुना ही होगा, अब गोवा नहीं विदेश चले जाते हैं, वहां सब बर्बाद हो चुका है। सवाल उठता है कि अपनी शांत और आधुनिकता के लिए सदियों से पहचाने जाने वाला शहर कुछ सालों में इतना बदनाम कैसे होता चला गया? समुद्र और शहर के खूबसूरत नजारों से पहले भयानक नशा, टैक्सी माफिया वाला खेल, हजारों की संख्या में तेज म्यूजिक वाले क्लब और तरह-तरह के हादसे... जिम्मेदार कौन है? सिर्फ प्रशासन या वो टूरिस्ट भी जिन्होंने ट्रैवलिंग का मतलब समझा ही नहीं? शायद गोवा को एक नए बदलाव की जरूरत पड़ेगी। ⓘ

सीनियर जर्नलिस्ट, उत्तर प्रदेश

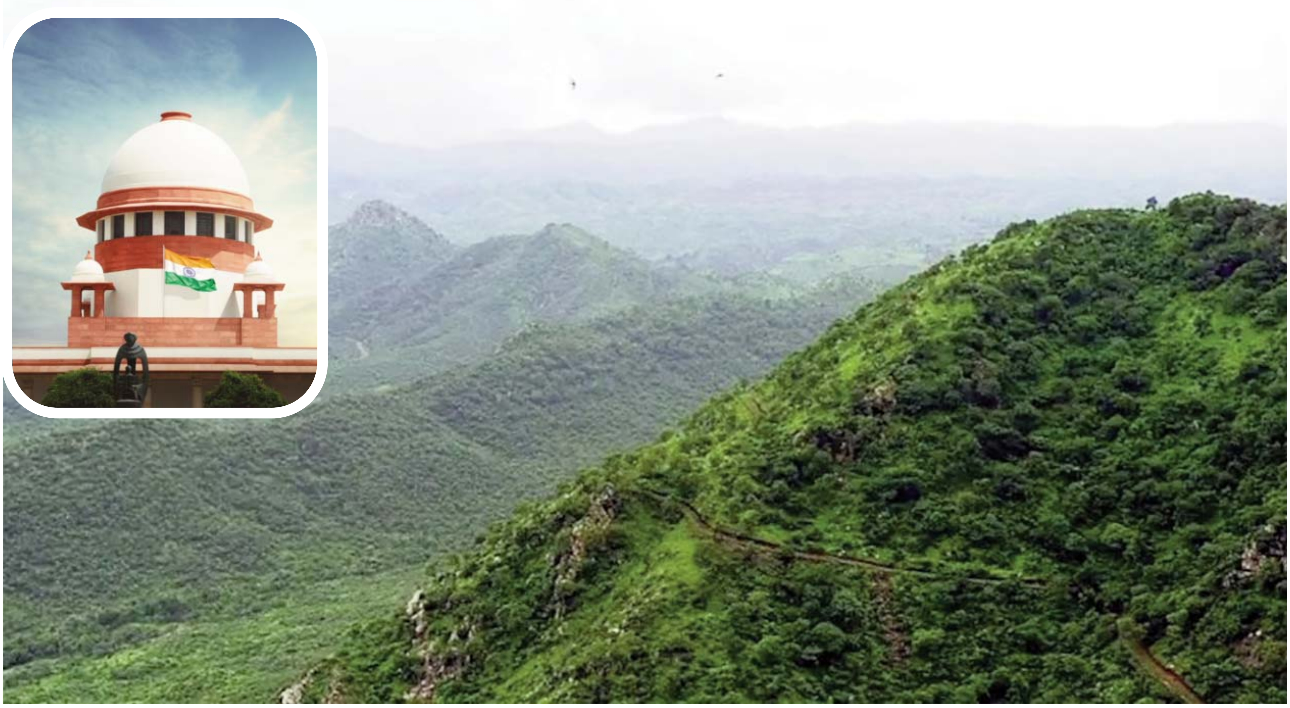

अरावली सुरक्षित तो भविष्य सुरक्षित

प्रदीप तिवारी

अरावली पर्वत विश्व की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है जिसकी आयु लगभग 3.2 अरब वर्ष है। यह भारत के उत्तर-पश्चिम में दिल्ली और राजस्थान से लेकर गुजरात तक लगभग 800 किलोमीटर की दूरी में फैली हुई पहाड़ियों की एक विस्तृत श्रृंखला है। इसका सबसे ऊंचा बिंदु माउंट आबू पर स्थित गुरु शिखर (ऊंचाई 1,722 मीटर) थार रेगिस्तान को पूर्व की ओर विस्तारित होने से रोकने के लिए एक प्राकृतिक बाधा के रूप में कार्य करती है।

अरावली पर्वतमाला भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र से होकर गुजरती है और मरुस्थलीकरण को रोकने, पारिस्थितिक खाके का समर्थन करने और नदियों और जैव विविधता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने अरावली के कुछ हिस्सों में अवैध खनन पर प्रतिबंध लगा दिया है। अरावली ग्रीन वॉल परियोजना का उद्देश्य हरियाली को बहाल करना है। पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने एनजीटी को और अधिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए कदम उठाए हैं। दिल्ली एनसीआर में धूल भरी आंधियों का कारण भी अरावली पर्वतमाला का क्षरण ही है।

अरावली पर्वतमाला लगभग 3.2 अरब वर्ष पुरानी है, जिसका निर्माण आर्कियन (प्री-कैम्ब्रियन) युग में हुआ था। ये वलयित पर्वत हैं जो विवर्तनिक प्लेटों की गति के परिणाम स्वरूप बने हैं, और इस प्रकार पृथ्वी पर भूवैज्ञानिक रूप से अक्षुण्ण रहने वाली सबसे प्राचीन भू-आकृतियों में से एक हैं। ज्वालामुखी गतिविधि से निर्मित इन पर्वतों का सदियों से क्षरण होता रहा है, जिससे इनकी ऊंचाई बहुत कम हो गई है। अरावली पर्वतमाला अब ऊंचे पर्वत नहीं बल्कि हिमालय की तरह कटी हुई पहाड़ियां बन गई हैं। अरावली पर्वतमाला हरियाणा और राजस्थान से होकर गुजरती है, जिसका उत्तरी छोर दिल्ली में और दक्षिण-पश्चिमी छोर गुजरात में स्थित है। यह पर्वत श्रृंखला एक

जलवायु अवरोधक का काम करती है जो थार रेगिस्तान को अधिक उपजाऊ पूर्वी राजस्थान से अलग करती है।

स्वाभाविक रूप से, अरावली पर्वत जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है; हालांकि, इसमें अभी भी कुछ महत्वपूर्ण चोटियाँ हैं, जो भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। अभी भी इस पर्वतमाला की कुछ चोटियां ऊँची हैं जैसे राजस्थान में गुरु शिखर माउंट आबू 1,722 मीटर, सेर चोटी उदयपुर 600 मीटर ,रघुनाथगढ़ चोटीसीकर, राजस्थान 1000 मीटर की ऊंचाई पर है।

यह एक धार्मिक और पर्यटन स्थल भी है, जिसका सबसे ऊँचा शिखर गुरु शिखर है। इस पर दत्तात्रेय का मंदिर स्थित है। यहाँ से साबरमती, बनास, लूणी और साहिबी नदियाँ निकलती हैं। इस पर्वत श्रृंखला में देश के कुछ महत्वपूर्ण वन्यजीव अभ्यारंय स्थित हैं, जैसे सरिस्का बाघ अभ्यारंय, माउंट आबू वन्य जीव अभ्यारंय, कुंभलगढ़ वन्यजीव अभ्यारंय, असोला भट्टी वन्यजीव अभ्यारंय, बलराम अंबाजी और जेस्सोर। उल्लेखनीय सांस्कृतिक स्थलों में दिलवारा मंदिर, कुंभलगढ़ किला और भानगढ़ किला शामिल हैं। सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय जोखिम अलवर, गुरुग्राम और फरीदाबाद में अवैध खनन दिल्ली-हरियाणा में शहरी भूमि पर अतिक्रमण और एनसीआर के पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापक वनों की कटाई हैं, इसलिए संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

थार मरुस्थल के खिलाफ एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच

अरावली पर्वत थार मरुस्थल के फैलाव के खिलाफ एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच का काम करती है। ये भूजल पुनर्भरण, स्थानीय मौसम की स्थितियों को भी नियंत्रित करती हैं और अंत में, ये एनसीआरबी को हरित फेफड़ों की तरह सेवाएं प्रदान करती हैं। पूरब की ओर मरुस्थल के विस्तार को रोकता है तथा मानसून परिसंचरण को प्रभावित करता है। इसकी छिद्रयुक्त चट्टानें पारगम्य होती हैं जो जमीन में जल को जिंदा रखती हैं। अरावली की सीमा में होने वाले विनाश के परिणाम स्वरूप ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण, जल संसाधनों की कमी और तापमान में वृद्धि होती है, अरावली जलवायु अनुकूलन के लिए भी महत्वपूर्ण है। नदियों की बात करें तो अरावली में कई बारहमासी नदियां बहती हैं। ये नदियां स्थानीय सिंचाई, पेयजल और जीविका पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं।

प्रमुख नदियों में बनास - चंबल में बहती है, साबरमती पश्चिम दिशा में बहने वाली एक बड़ी नदी है, लूणी नदी कच्छ के रण में बहती है, साहिबी नदी यमुना नदी में जाकर मिलती है, सरस्वती (विलुप्त प्रजाति) माना जाता है कि उनका जन्म यहीं हुआ था। इनमें से अधिकांश नदियाँ मौसमी हैं, इसलिए इस क्षेत्र में वर्षा जल का संरक्षण महत्वपूर्ण है। अरावली के तलहटी में बसा कुंभलगढ़ किला राजसमंद जिले के बहुत नजदीक स्थित है जो यूनेस्को की सूची में शामिल है।

वन्य जीवों की अनेक दुर्लभ प्रजातियों का गढ़

वन्य जीवों के दृष्टि से भी अरावली पर्वत के तलहटी में स्थित अभयारंय/राष्ट्रीय उद्यान में

वन्य जीवों की अनेकों दुर्लभ प्रजातियां पायी जाती हैं। गुजरात के बनासकांठा में स्थित जेस्सोर स्लॉथ बियर अभयारण्य में सुस्त भालू (लुप्तप्राय), लकड़बग्घा, लोमड़ी, राजस्थान के सरिस्का टाइगर रिजर्व मे बाघ, तेंदुआ, नीलगाय, माउंट अबू वन्यजीव अभयारंय सुस्त में भालू, तेंदुआ, कुंभलगढ़ वन्यजीव अभ्यारंय में भेड़िया, मृग, पैंथर, जयसमंद वन्यजीव अभ्यारंय में मगरमच्छ, चिंकारा दिल्ली के असोला भट्टी डब्ल्यूएल एस में मोर, सियार आदि वन्य जीव पाए जाते हैं। अरावली पर्वत भारत की एक महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता है और देश की प्राकृतिक विरासत का अभिन्न अंग है। इसका ऊबड़-खाबड़ भूभाग, सुंदर परिदृश्य और विविध वन्यजीव यात्रियों को अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं। यह जल और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो इसे भारत के पारिस्थितिक संतुलन का एक अनिवार्य हिस्सा बनाता है। इसके महत्व के बावजूद, यह पर्वतमाला वनों की कटाई, अवैध शिकार और जलवायु परिवर्तन सहित कई चुनौतियों का सामना कर रही है। इस पर्वतमाला की रक्षा के लिए, सतत वानिकी, वन्यजीव संरक्षण और सतत भूमि प्रबंधन जैसे संरक्षण उपायों को लागू करना आवश्यक है। निरंतर प्रयासों से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि अरावली पर्वतमाला आने वाले वर्षों में भारत की प्राकृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जहां विकास और खनन के नाम पर अनाधिकृत प्रवेश किया जा रहा है।

अरावली पर्वत श्रृंखला राजस्थान के रेत भरी आँधी को हिमालय के ग्लेशियर तक पहुंचने से रोकता है, अगर ये रेत की परत हिमालय के ग्लेशियर पर जमा हुआ तो ये ग्लेशियर पिघलने का कारण बनेगा और इससे उत्पन्न हुई परस्थिति उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा साहित भारत के अधिकांश भाग के लिए जल प्रलय के रूप में उपहार स्वरूप मिलेगा। ये सिर्फ पहाड़ नहीं है ये अरावली है, हजारों साल पुरानी जिंदा दीवार है जो रेगिस्तान को शहरों से अलग रखती है, जो हवा को सांस देना सिखाती है, जो पानी को जमीन के अंदर जिंदा रखती है, आज ये खामोश है। सवाल विकास का नहीं जिम्मेदारी का है, ये हमारे हाथ में है कि इतिहास बचेगा या सिर्फ तस्वीर।

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट के अरावली पहाड़ियों की परिभाषा बदलने वाले आदेश के बाद इस फैसले का विरोध हो रहा है। इस फैसले के बाद अरावली की जमीन के बड़े हिस्से को कमर्शियल एक्टिविटी और माइनिंग के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। राजनीतिक दलों के विरोध के साथ ही एक्टिविस्ट और पर्यावरणविद इस कदम के खिलाफ रैली कर रहे हैं। अरावली पर्वतमाला की नई परिभाषा पर सियासी घमासान चल रहा है, अशोक गहलोत ने 100 मीटर फॉमूर्ले पर सवाल उठाए हैं। वहीं केंद्र का दावा है कि नई वैज्ञानिक परिभाषा से अरावली का 90% से अधिक इलाका संरक्षित होगा। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नई खनन लीज पर रोक लगाई, दीर्घकालिक माइनिंग प्लान अनिवार्य किया। देश की सबसे पुरानी पर्वतमालाओं में से एक अरावली एक बार फिर सियासी और पर्यावरणीय बहस के केंद्र में है। वजह है अरावली की 'परिभाषा' और उससे जुड़े 100 मीटर फॉमूर्ले को लेकर उठा विवाद, जिस पर अब सुप्रीम कोर्ट ने मुहर लगा दी है। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इसे अरावली के लिए खतरा बता रहे हैं, तो वहीं केंद्र सरकार और बीजेपी का दावा है कि यह परिभाषा पहले से ज्यादा सख्त, वैज्ञानिक और संरक्षण-केंद्रित है।

विवाद की जड़: 100 मीटर का फॉमूला

अशोक गहलोत का आरोप है कि बीजेपी सरकार ने उस 100 मीटर फॉमूर्ले को मान्यता दिलवाई, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने 2010 में खारिज कर दिया था. उनके मुताबिक, नई परिभाषा से अरावली की करीब 90 फीसद पर्वतमाला नष्ट हो सकती है, जिससे खनन माफिया को फायदा मिलेगा और राजस्थान के पर्यावरण को भारी नुकसान होगा. हालांकि, केंद्र सरकार इस आरोप को पूरी तरह खारिज कर चुकी है।

क्या कहती है नई परिभाषा?

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के तहत बनी समिति की सिफारिशों को सुप्रीम कोर्ट ने 20 नवंबर 2025 को स्वीकार किया। इसके मुताबिक-ऐसी कोई भी जमीन जिसकी ऊंचाई स्थानीय भू-भाग (जमीन) से 100 मीटर या उससे अधिक हो। यदि दो या उससे अधिक ऐसी पहाड़ियां 500 मीटर के दायरे में हैं, तो उन्हें एक ही पहाड़ियों का समूह माना जाएगा। इन पहाड़ियों और रेंज के भीतर आने वाले सभी लैंडफॉर्म, उनकी ऊंचाई या ढलान चाहे जो हो, खनन से बाहर रहेंगे। सरकार का कहना है कि इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि 100 मीटर से नीचे के सभी इलाके खनन के लिए खोल दिए गए हैं।

केंद्र का दावा: संरक्षण पहले से अधिक मजबूत

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव के मुताबिक, नई परिभाषा से अरावली क्षेत्र का 90 फीसद से अधिक हिस्सा संरक्षित क्षेत्र में

आ जाएगा। सरकार का तर्क है कि इससे अस्पष्टता खत्म होगी, राज्यों में नियम एक जैसे होंगे और अवैध खनन पर सख्त लगाम लगेगी.भूपेंद्र यादव ने कहा,'अरावली के 1.44 लाख वर्ग किलोमीटर के कुल एरिया में से सिर्फ 0.19 फीसद क्षेत्र में ही माइनिंग यानी खनन की इजाजत है. बाकी पूरी अरावली को संरक्षित और सुरक्षित रखा गया है।''100-मीटर' के नियम पर विवाद के बीच जारी एक स्पष्टीकरण में, सरकार ने उन दावों को खारिज कर दिया कि 100 मीटर से कम ऊंचाई वाले इलाकों में माइनिंग की इजाजत दी गई है और कहा कि यह पाबंदी पूरे पहाड़ी सिस्टम और उनसे जुड़ी जमीनों पर लागू होती है, न कि केवल पहाड़ी चोटी या ढलान पर।

राजस्थान मॉडल बना आधार

पर्यावरण मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट ने मई 2024 में अरावली से जुड़े लंबे समय से लंबित मामलों की सुनवाई के दौरान एक समान परिभाषा तय करने के लिए समिति बनाई थी। इसमें राजस्थान, हरियाणा, गुजरात और दिल्ली के प्रतिनिधि शामिल थे। समिति ने पाया कि केवल राजस्थान में ही 2006 से अरावली की एक औपचारिक परिभाषा लागू है। उसी को आधार बनाकर, लेकिन अतिरिक्त सुरक्षा उपायों के साथ, सभी राज्यों ने इसे अपनाने पर सहमति दी। इनमें भारतीय सर्वेक्षण विभाग के नक्शों पर पहाड़ियों की अनिवार्य मैपिंग, 500 मीटर के भीतर की पहाड़ियों को एक ही रेंज मानना, कोर और अछूते क्षेत्रों की स्पष्ट पहचान, अवैध खनन रोकने के लिए ड्रोन, सीसीटीवी और जिला टास्क फोर्स शामिल हैं।

सुप्रीम कोर्ट के अहम निर्देश

सुप्रीम कोर्ट ने समिति की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए साफ निर्देश दिए कि नई खदान लीज पर तब तक रोक रहेगी, जब तक पूरे अरावली क्षेत्र के लिए सस्टेनेबल माइनिंग मैनेजमेंट प्लान (एमपीएसएम) तैयार नहीं हो जाता. यह भी निर्देश दिया गया कि कुछ रणनीतिक और परमाणु खनिजों के अलावा कोर और अछूते क्षेत्रों में खनन पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा. साथ ही मौजूदा खानों को भी सख्त पर्यावरणीय और वन नियमों का पालन करना होगा।

अरावली क्यों है इतनी अहम

राजधानी दिल्ली से हरियाणा होते हुए राजस्थान और गुजरात के पालनपुर तक फैली अरावली पर्वतमाला केवल पहाड़ नहीं बल्कि देश की सबसे बड़ी रेगिस्तान थार के फैलाव को रोकने वाली एक प्राकृतिक दीवार भी है. जैव विविधता और वन्यजीवों से अटे पड़े इस पर्वतमाला का क्षेत्र भूजल रिचार्ज का बहुत बड़ा स्रोत है. इसे दिल्ली-एनसीआर का ग्रीन लंग्स भी कहा जाता है. अब जहां अशोक गहलोत इसे पुराने, खारिज किए जा चुके फॉमूर्ले की वापसी बता रहे हैं, वहीं केंद्र और सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि यह उसी परिभाषा को ज्यादा मजबूत और वैज्ञानिक बनाना है, ताकि पूरी पर्वतमाला और उससे जुड़े इकोसिस्टम की सुरक्षा हो सके। अरावली का मामला सिर्फ 100 मीटर का नहीं, बल्कि पूरे लैंडस्केप, पानी, हवा और भविष्य की पीढ़ियों से जुड़ा है. सुप्रीम कोर्ट की मुहर के बाद गेंद अब केंद्र और राज्यों के अमल पर है- क्या नियम जमीन पर सख्ती से लागू होंगे या अरावली फिर विवादों में घिरती रहेगी। सरकार और माननीय उच्चतम न्यायालय की पहाड़ी के लिए दी गयी परिभाषा के अनुसार अरावली पर्वत श्रृंखला की लगभग सवा लाख पहाड़ियों में सिर्फ लगभग बारह सौ पहाड़ियां ही इसके अंतर्गत आती हैं। इस तरह की सोच भारत के पर्यावरण के लिए बहुत ही खतरनाक साबित होगा। अरावली आज खतरे में है,दांव पर सिर्फ. पहाड़ नहीं..जंगल, वन्यजीव आने वाली पीढ़ियां हैं। तो जागो और अरावली का सुरक्षा कवच बनो।

अरावली के प्रति जिम्मेदारी निभाते हुए लिखी गयी चंद लाइन-

यह प्राणदायिनी अरावली केवल वन का विस्तार नहीं, यह प्राणदायिनी अरावली पाषाण खण्ड का सार नहीं, यह प्राणदायिनी अरावली ना जंगल की परिभाषा है, यह भारत के जन मानस के जीवन की अभिलाषा है। यह प्राणदायिनी अरावली जो हमको रोटी देती है, नदियां लेकर के जन्म जहाँ विस्तार स्वयं का लेती है जिसने सदियों इस राष्ट्र की गौरव गाथा को गाया है, जिसमें पद्मिनी, प्रताप, सांगा सारा इतिहास समाया है। जिसने प्राणों की रक्षा की वर्षों विपदाओं को सहकर, यह प्राणदायिनी अरावली हम जिसे पूजते मां कहकर, तो आज कलम कागज सुन ले आज न्याय का तंत्र सुन ले, सुने आज अंधा शासन ये बहरा लोकतंत्र सुनले। सुन ले शासक जो धन बल की चौखट पर जय जय करते हैं, मां की परिभाषा क्या होती बेटे बेटी तय करते हैं।

(लेखक इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अधिवक्ता हैं)

पूत निकला कपूत!

मुस्लिम पत्नी खातिर माता पिता को काट डाला

मृतक पिता श्याम बहादुर और माता बबीता देवी (फाइल फोटो)

जिस कोख से जन्म लिया, जिनकी गोद में खेलकर बचपन गुजारा, उसका ही सगा न निकला। पढ़े लिखे इंजीनियर युवक की दास्तां जो मुस्लिम पत्नी खातिर माता पिता के सिर को पत्थर के सिल बट्टे से कूंच कर मार डाला। शव के छह टुकड़े बोरियों में भरकर नदी में फेंक आया। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की दिल दहला देने वाली गाथा।

दीपा यादव/दीपक तिवारी

वो 8 दिसंबर 2025 की आधी रात थी। तिथि के लिहाज से मंगलवार की शुरूआत हो चुकी थी पर उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में एक ऐसे 'अमंगल' की शुरूआत हो चुकी थी कि सुबह जिसने भी सुना सिर पकड़कर बैठ गया। मुंह से हठात निकला-इससे अच्छा तो बे-औलाद ही भला। गांव में बबीता और बहादुर नामक दंपत्ति की दिल दहला देने वाली मौत,उसके तौर तरीके और वजह ने आम जनमानस को झकझोर कर रख दिया। जौनपुर जिले में मुस्लिम पत्नी के लिए इंजीनियर इकलौते बेटे ने अधेड़ उम्र माता-पिता के सिर को पहले पत्थर के सिल बट्टे से कूंचा फिर लोहे की आरी से शरीर के 6 टुकड़े करने के बाद 7 अलग अलग बोरों में अपनी कार में रखा और नदी में फेंक आया।

9 दिसंबर की भोर, दिल दहला देने वाली इस भयावह वारदात को अंजाम देने वाला युवक अंबेश कुमार जब पुलिस के हत्थे चढ़ा तो भयावह सच्चाई सामने आई। असलियत सामने आने पर लोगों का कलेजा कांप उठा। दरअसल, इंजीनियर बेटे ने एक मुस्लिम युवती से लव मैरिज की थी,इससे माता-पिता नाखुश थे। आरोपी युवक ने पुलिस को बताया कि मां और पिता दोनों मिलकर मेरी शादी तुड़वाना चाहते थे। माता-पिता की हत्या का आरोपी इंजीनियर अंबेश कुमार ने 6 साल पहले पश्चिम बंगाल की एक युवती से लव मैरिज किया था। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के जफराबाद क्षेत्र में अहमदपुर गांव है। यहां के पुरानी गोदाम निवासी श्याम बहादुर मूल रूप से जौनपुर स्थित केराकत क्षेत्र के खरगसेनपुर गांव के रहने वाले थे। रामनारायण ने दामाद श्याम बहादुर को अहमदपुर गांव में प्रापर्टी दी थी। श्याम बहादुर जमशेदपुर में रेलवे के लोको पायलट पद पर तैनात थे। कुछ महीने पहले ही श्याम बहादुर सर्विस से रिटायर्ड होने के बाद गांव अहमदपुर

हत्यारोपी अंबेश कुमार, घर के बाहर जुटी भीड़ और पड़ताल करती पुलिस।

आ गए और यहीं पत्नी बबीता के साथ जीवन यापन कर रहे थे। श्याम बहादुर के तीन बेटियां वंदना, अर्चना, सपना और एक बेटा अंबेश कुमार है। तीनों बेटियों की शादी हो चुकी है। इकलौता बेटा अंबेश कुमार बीटेक की डिग्री लेने के बाद कोलकाता की एक नामी कंपनी में क्वालिटी इंजीनियर के पद पर सर्विस करता है। हत्यारोपी अंबेश ने पुलिस को पूछताछ के दौरान बताया कि कोलकाता में ही नौकरी के दौरान उसकी मुलाकात सहजिया नाम की युवती से हुई। थोड़े दिन बाद दोनों में नजदीकियां बढ़ी और 2019 में दोनों ने लव मैरिज कर लिया। अंबेश व सहजिया से दो बेटे हैं। इसमें एक की उम्र 5 साल और दूसरे की 11 महीने है। बताया जा रहा है कि इस लव मैरिज से अंबेश कुमार के परिजन खुश नहीं थे। इसे लेकर पिता श्याम बहादुर और मां बबीता से अंबेश की अक्सर कहा सुनी होती थी। अंबेश भी अपने मां-बाप से नाराज रहता था पुलिस के अनुसार,अंबेश कुमार ने अपने बयान में कहा है कि 8 दिसंबर की रात इसी बात को लेकर घर में झगड़ा हुआ। बात यहां तक पहुंचेगी किसी को इसका आभास भी न था। एसीपी सिटी आयुष श्रीवास्तव के अनुसार,अंबेश ने पूछताछ में घटना का सिलसिलेवार ब्यौरा दिया है।

अंबेश कुमार ने पुलिस को बताया कि माता-पिता हर हालत में मेरी शादी दूसरी जगह करवाना चाहते थे। वे चाहते थे कि मैं दूसरी शादी कर लूं। अंबेश की मानें तो, वह दूसरी जगह शादी करने के लिए पहले तैयार भी हो गया, लेकिन गुजारा भत्ता उसे देना होता। माता-पिता गुजारा भत्ता देने को तैयार नहीं थे। ऐसे हालात में उसने तलाक देने से इंकार कर दिया। इस बात को लेकर भी काफी कहासुनी हुई। मां ने कहा, तुम घर से निकल जाओ। इस पर अंबेश ने कहा यह घर मेरी नानी ने मुझे नेवासा में दिया है,आप लोग ही घर छोड़कर चले जाइए। इस पर मेरी मां मुझे धक्का देकर घर से बाहर करने लगी तो मुझे गुस्सा आ गया। पास में टेबल पर लोहे का खल बट्टा रखा था, उसे उठाया व मम्मी के सिर पर ताबड़तोड़ प्रहार करने लगा। पापा बोले मैं पुलिस को बुला रहा हूं। वो मोबाइल लेकर पुलिस को फोन करने लगे, इस पर खल बट्टा से उनके सिर पर भी प्रहार किया। अंबेश के शब्दों में 'मम्मी -पापा घायल होकर वहीं गिर पड़े, वो अचेत हो चुके थे। हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करूं? घटना तो हो ही चुकी थी, अब मुझे ही उसे फेस करना था। इसके बाद रस्सी से दोनों के गले को कसना शुरू किया। थोड़ी देर बाद दोनों की मौत हो चुकी थी। लाश को ठिकाने लगाने की समस्या सामने थी। मकान के बेसमेंट में इलेक्ट्रिक आरी रखी थी।

दोनों लाश को आरी से तीन तीन टुकड़ों में काटने के बाद 6 बोरियों में भरने के बाद स्विफ्ट डिजायर कार की डिग्गी में लादकर 9 दिसंबर की सुबह चार से पांच बजे गोमती नदी के किनारे पहुंचा। बेलाव पुल से दोनों की लाश फेंक दिया। घर वापस लौटने के बाद दुबारा फर्श में बिखरे खून के धब्बे साफ किया। इसी बीच देखा कि वहां मम्मी के पैर का एक टुकड़ा कटा हुआ पड़ा था। उसे लेकर कार से सई नदी के किनारे जलालपुर पहुंचा और पुल से नीचे नदी में फेंककर वापस घर आ गया। इसके बाद एक दिन अंबेश की बहन वंदना ने फोन कर मम्मी पापा के बारे में पूछा तो उनसे झूठा बहाना बनाया कि दोनों कहीं बाहर निकले हैं। बहन का फोन दुबारा आने पर फिर टालने की कोशिश की। अंबेश द्वारा बहन को बताया गया कि लापता मम्मी पापा को खोजने की कोशिश की जा रही है। बहनों को शक हो गया। उन्होंने पुलिस से मिलकर तहरीर दी। इस बीच अंबेश फरार हो गया। 15 दिसंबर को घर अहमदपुर आने के बाद अंबेश ने अपने घर के गेट पर एक अन्य ताला भी लगा देखा। अंबेश ने बहन को फोन करके गेट पर ताला लगा होने के बारे में पूछा। इसी बीच बहन वंदना वहां आ गई। मम्मी पापा के बारे में जोर देकर पूछने लगी। थोड़ी देर बाद अंबेश ने बहन को मम्मी-पापा के कत्ल के बारे में जानकारी दी। सच्चाई जानकर वंदना सन्न रह गई। वंदना ने पुलिस से मिलकर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने खोजबीन के तीन टीमों का गठन किया। 15 दिसंबर को पुलिस को अंबेश मिल गया।

पुलिस की पूछताछ में अंबेश ने वारदात अंजाम देने की बात कबूल कर लिया। पता चला है कि अंबेश की पत्नी पहले 10 लाख रुपए मांग रही थी, बाद में पांच लाख रुपए पर वह राजी हो गई थी पर अंबेश के पास 5 लाख रुपए भी नहीं थे। अंबेश के चाचा ने बताया कि रुपए को लेकर अक्सर अंबेश का अपने माता पिता से झगड़ा होता था। बहरहाल, पुलिस ने अंबेश को जेल भेज दिया है। इस घटना को सुनने वाले ज्यादातर लोग यही कह रहे हैं कि इससे अच्छा तो बे-औलाद ही होना ठीक है। एक बेटा ही माता पिता का हत्यारा बन बैठा।

मानसिक और भाषा की आजादी अभी बाकी : न्यायमूर्ति डॉ. गौतम

- हिंदुस्तानी एकेडमी के गांधी सभागार में विचार सेतु पत्रिका व वेबसाइट का लोकार्पण
- भारतीय भाषाओं की स्वीकार्यता और सम्मान को लेकर हर हाल में चलना होगा

राष्ट्र आजाद हो गया, लेकिन मानसिक और भाषा की आजादी अभी बाकी है। मिलजुलकर इस विचारधारा पर कार्य करने की जरूरत है। उक्त बातें न्यायमूर्ति डॉ. गौतम चौधरी ने कही। वह शनिवार को हिंदुस्तानी एकेडमी के गांधी सभागार में विचार सेतु पत्रिका और वेबसाइट के लोकार्पण समारोह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार और उसके 100 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पर आयोजित कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

मुख्य अतिथि ने कहा कि समस्त भाषाओं का सम्मान होना चाहिए, लेकिन हिंदी की उपेक्षा करना कतई ठीक नहीं है। भारतीय भाषाओं की स्वीकार्यता और सम्मान को लेकर हर हाल में चलना होगा। विशिष्ट

हिंदुस्तानी एकेडमी का गांधी सभागार में विचार सेतु पत्रिका और वेबसाइट के लोकार्पण समारोह में बोलते मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति डॉ. गौतम चौधरी। सौजन्य : आयेजक

विचार सेतु द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका के साथ अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर सुरेश रैना साथ में संतोष तिवारी।

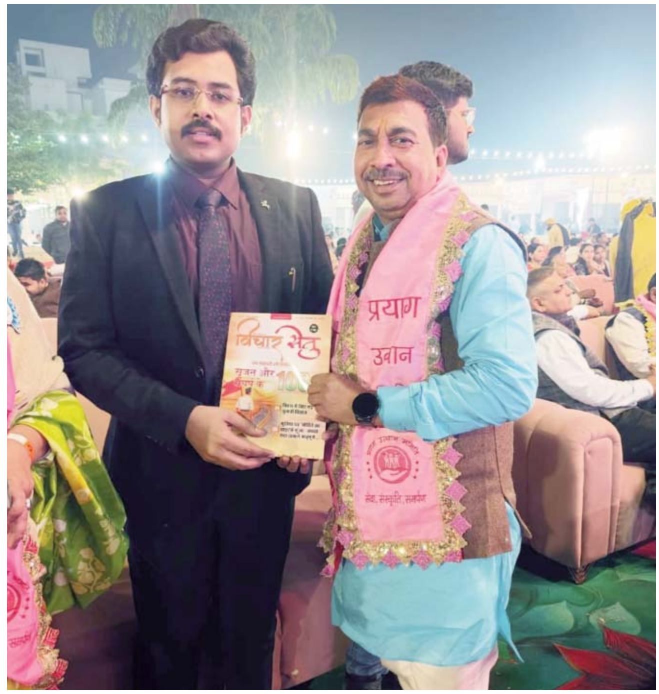

विचार सेतु द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका के साथ युवा समाजसेवी रौनक गुप्ता साथ में संतोष तिवारी।

विचार सेतु द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका का अवलोकन करते महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमंत्री श्रीमान देवेंद्र फडणवीस जी साथ वरिष्ठ पत्रकार अभिषेक पाण्डेय।

अतिथि न्यायमूर्ति विपिन चंद्र दीक्षित राष्ट्र और समाज के हित में उठाए जाने वाले मद्दों को विस्तार रूप में देने की जरूरत बताया।

महापौर गणेश केसरवानी ने साहित्यिक परंपरा को गति देने की जरूरत पर जोर दिया। मुख्य स्थाई अधिवक्ता विजय शंकर मिश्र ने वर्तमान में एक राष्ट्र के रूप में भारत की बढ़ती पहचान को लेकर विस्तार से चर्चा की। मुख्य स्थाई अधिवक्ता शीतला प्रसाद गौड़ ने कहा मौजूदा समय में वैचारिक बदलाव के दौर में इस तरह की विचारधारा की पत्रिका का होना आवश्यक है। अधिवक्ता प्रदीप तिवारी ने अतिथियों का स्वागत किया। आभार शिवाशंकर पांडेय व संचालन श्लेष गौतम ने किया। राजेंद्र त्रिपाठी रसराज और आनंद श्रीवास्तव की कविताओं ने माहौल बदल दिया। इस अवसर अजीत, अखिलेश त्रिपाठी, अनुराग सिंह, सुनील राय, जयवर्धन त्रिपाठी, गोपालजी पांडेय, सुजीत शुक्ला, नाजिम अली, वरुण केशरवानी रवि, शिव पूजन सिंह रहे।

Indian Education system 2026:
A Transformation Guide

Dr. Vijay Garg

The National Education Policy (NEP) 2020 is a comprehensive blueprint designed to transform India into a vibrant knowledge society by providing high-quality, flexible, and multidisciplinary education. By 2026, the Indian education system is anticipated to have undergone significant structural and pedagogical changes, setting the stage for achieving the policy's long-term goals by 2030 and 2035.

New School Structure: The 5+3+3+4 DesignThe most radical change is the replacement of the rigid 10+2 structure with a new 5+3+3+4 curricular and pedagogical framework. By 2026, most states and educational boards are expected to be well into the transition phase of this new model.Foundational Stage (Age 3-8): 3 years of Anganwadi/Pre-school + Grades 1-2. The focus is on Early Childhood Care and Education (ECCE), emphasizing play-based and activity-based learning to build strong cognitive and socio-emotional foundations.**Preparatory Stage (Age 8-11): Grades 3-5. This stage introduces more structured learning, focusing intently on achieving Foundational Literacy and Numeracy (FLN), a top priority under the NIPUN Bharat Mission (National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy).**Middle Stage (Age 11-14): Grades 6-8. A crucial shift occurs here with the introduction of subject-oriented pedagogy across Science, Mathematics, Arts, Social Sciences, and Humanities. Importantly, Vocational Education is integrated, including practical skills and internships.**Secondary Stage (Age 14-18): Grades 9-12. This stage offers greater flexibility in subject choice, breaking the rigid barriers of Science, Commerce, and Arts streams. Students can opt for a multidisciplinary approach, choosing subjects like Physics with Music.<

Key Pedagogical and Assessment Shifts by 2026The core aim of NEP 2020 is to move away from rote learning toward critical thinking and experiential learning.Holistic and Integrated Learning: There will be no rigid separation between curricular, co-curricular, and extra-curricular activities, or between vocational and academic streams. This fosters a more well-rounded development for students.Reformed Assessments (PARAKH): Board exams will shift from high-stakes, one-time tests to a more flexible

and formative system that tests conceptual understanding, critical thinking, and application of knowledge. The new National Assessment Centre, PARAKH (Performance Assessment, Review, and Analysis of Knowledge for Holistic Development), is being established to set norms, standards, and guidelines for student assessment across all school boards.Multilingualism: The policy strongly emphasizes the use of the mother tongue/local language as the medium of instruction up to Grade 5, and preferably until Grade 8, promoting cognitive development and cultural pride.

Higher Education Transformation MilestonesBy 2026, major reforms in higher education are expected to be operational in central and many state universities:Multidisciplinary Institutions: The gradual conversion of standalone institutions into large multidisciplinary universities and clusters.Flexible Undergraduate Programs: The Four-Year Undergraduate Programme (FYUP), with multiple entry and exit options, is being rolled out widely.1 Year: Certificate2 Years: Diploma3 Years: Bachelor's Degree4 Years: Bachelor's Degree (Honours/Research)Academic Bank of Credits (ABC): This digital repository, which stores academic credits earned by a student, is expected to be fully functional, enabling students to transfer and redeem credits, facilitating the multiple entry/exit system.

Tech Integration and Teacher EmpowermentDigital Learning: Platforms like DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing) are being continuously expanded with high-quality digital content. The focus remains on bridging the digital divide to ensure equitable access.Teacher Training: The minimum degree qualification for teaching is set to become a 4-year integrated B.Ed. degree by 2030. By 2026, widespread, continuous professional development programs (NISHTHA) are intensifying, equipping teachers with new pedagogical skills required for the NEP framework.Challenges and The Way ForwardWhile the vision is transformative, the implementation faces significant challenges by 2026:Infrastructural Gaps: Many areas, particularly rural and remote ones, require considerable investment in physical infrastructure (classrooms, labs) and digital infrastructure (internet connectivity, devices) to fully support the NEP's goals.Teacher Capacity: Scaling up the training programs and recruiting qualified teachers for the new multilingual, multidisciplinary, and vocational-focused curriculum remains a major task.Funding and Consensus: Achieving the target of increasing public spending on education to 6% of GDP is crucial. Furthermore, successful implementation requires overcoming resistance to structural changes and building consensus among various state and central educational bodies.

The year 2026 marks a critical halfway point for many of the NEP 2020's short-to-medium-term goals, with the education system rapidly moving towards a student-centric, skill-focused, and globally aligned model. Writer is Retired Principal Educational columnist Eminent Educationist street kour Chand MHR Malout Punjab.

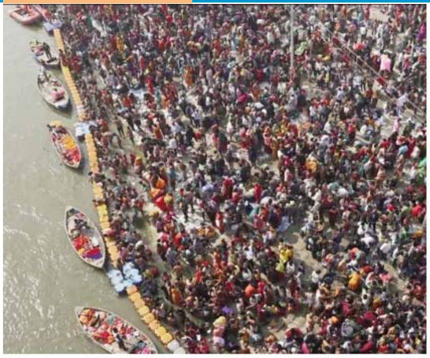

भारत को झकझोरने वाली 10 प्रमुख घटनाएं, जिम्मेदारों पर भी उठे सवाल

वर्ष 2025 की इन घटनाओं ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया

गिरीश पांडेय

वर्ष 2025 भारत के लिए कई मायनों में दुखद साबित हुआ, क्योंकि देश ने एक के बाद एक कई हृदय विदारक हादसों और त्रासदियों का सामना किया। चाहे वह मानवीय चूक के कारण हुई औद्योगिक त्रासदी हो, धार्मिक आयोजन में हुई भगदड़ हो या फिर सुरक्षा विफलता के कारण हुआ आतंकी हमला हो, इन घटनाओं ने देश की सुरक्षा प्रणाली, भीड़ प्रबंधन और आपदा तैयारियों पर गंभीर सवाल खड़े किए। इन दुर्घटनाओं में न सिर्फ जान-माल का नुकसान हुआ बल्कि ये देशवासियों के दिलों पर भी गहरे जख्म छोड़ गईं। यूं तो गुजरते साल में कई दुर्घटनाएं और हादसे हुए, लेकिन यहां हम चुनिंदा 10 हादसों के बारे में बता रहे हैं।

अहमदाबाद विमान दुर्घटना

2 जून, 2025 का मनहूस दिन, जब अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास एयर इंडिया

का बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर यात्री विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस दुखद दुर्घटना में विमान में सवार 241 यात्री और चालक दल के सदस्य मारे गए। हालांकि एक यात्री की आश्चर्यजनक रूप से जान बच गई। प्रारंभिक जांचों में सामने आया कि यह हादसा तकनीकी खराबी के चलते हुए। इस विमान ने अहमदाबाद से लंदन के लिए उड़ान भरी थी। उड़ान के कुछ ही समय बाद विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। यह साल 2025 की दुनिया की सबसे बड़ी विमानन त्रासदी थी, जिसने देश में विमानन सुरक्षा मानकों पर भी सवाल खड़े किए।

प्रयागराज महाकुंभ भगदड़

दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समागम यूपी के प्रयागराज महाकुंभ में 29 जनवरी को शाही स्नान के अवसर पर भगदड़ मच गई। इस त्रासदी में 30 से ज्यादा श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हो गए। अत्यधिक भीड़, बैरिकेडिंग में कमी और अफवाहों के कारण यह भगदड़ हुई। इस घटना ने भारत के बड़े धार्मिक आयोजनों में भीड़ नियंत्रण और आपदा प्रबंधन की कमियों को उजागर किया। महाकुंभ के दौरान 66 करोड़ (देश की आधी आबादी से थोड़े कम) से ज्यादा श्रद्धालु प्रयागराज पहुंचे थे।

पहलगाम आतंकवादी हमला

22 अप्रैल का बहुत ही क्रूर दिन था, जब आतंकवादियों ने पहलगाम की बैसरन घाटी में 26 लोगों को मौत के घाट उतार दिया। इन आतंकवादियों ने लोगों से धर्म पूछकर उन्हें गोली मारी। इनमें ज्यादातर पर्यटक थे। इस हमले की जिम्मेदारी आतंकवादी समूह लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े एक संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने ली थी। हालांकि इस घटना के बाद भारत सरकार ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए पाकिस्तान के आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया। इसमें कई आतंकियों को मारने का दावा भी किया गया।

सरकार ने यह भी दावा किया था कि इस घटना के लिए जिम्मेदार 3 आतंकियों को भी सुरक्षाबलों ने मार गिराया है। कुछ समय के लिए तो दोनों देशों की सेनाएं आमने-सामने हो गईं। हालांकि बाद में संघर्षविराम हो गया, जिसका अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कई बार श्रेय लेने की कोशिश की। लेकिन, यह घटना अपने पीछे सवाल भी छोड़ गई कि आतंकी इतने भीतर तक घुसकर हमला करने में आखिर सफल कैसे हो गए? उस समय पुलिस और दूसरे सुरक्षाबल क्या कर रहे थे?

जाते-जाते जख्म दे गया साल

वर्ष 2025 जाते-जाते भी जख्म दे गया, जब 6 दिसंबर को गोवा के अरपोरा में नाइट क्लब में लगी भीषण आग ने 25 जिंदगियां लील लीं। मस्ती का अड्डा कुछ ही मिनटों में श्मशान में तब्दील हो गया। इस दुर्घटना के बाद सरकार, प्रशासन और पुलिस सभी कठघरे में हैं। कई लोग बाहर निकलने का रास्ता नहीं खोज पाए और दम घुटने से उनकी मौत हो गई। आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया गया, लेकिन आपातकालीन निकास की कमी और सुरक्षा मानकों की घोर अनदेखी लोगों की मौत का कारण बनीं।

जब जश्न मातम में बदला

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की टीम द्वारा आईपीएल फाइनल जीतने के बाद 4 जून 2025 को बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम में विजेता टीम के साथ अन्य हस्तियां भी पहुंची थीं। बड़ी संख्या में लोग स्टेडियम के द्वारों पर एकत्रित हो गए। अचानक भगदड़ मच गई और देखते ही देखते जीत का जश्न मातमी चीखों में बदल गया। इस हादसे में 11 लोगों की मौत हुई और 30 से ज्यादा लोग घायल हो गए। हादसे के बाद विराट कोहली ने कहा था- मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं हैं। मैं पूरी तरह से टूट गया हूं। इस हादसे में भीड़ प्रबंधन के मामले में लापरवाही ही सामने आई।

बादलों से बर्बादी

उत्तराखंड में 15 से 20 अगस्त के बीच बादलों ने बबार्दी की कहानी लिख दी। बादल फटने की घटनाओं में पिथौरागढ़ जिले के धारचूला और मुनस्यारी के ऊपरी इलाके, चमोली जिले के जोशीमठ और आस-पास के गांव तथा उत्तरकाशी जिले के बडकोट और मोली ब्लॉक के कुछ गांव बुरी तरह प्रभावित हुए। इस दौरान 70 से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई, जबकि कई लोग लापता हो गए। घायलों की संख्या भी दर्जनों में थी। 15 से अधिक पुल और 100 किमी से अधिक सड़कें तबाह हो गईं। 150 से अधिक मकान पूरी तरह से नष्ट हो गए। कई हेक्टेयर कृषि भूमि पूरी तरह से बह गई, और सैकड़ों पशुधन की मृत्यु हुई।

करूर में 40 से ज्यादा लोगों की मौत

तमिलनाडु के करूर में 27 सितंबर 2025 को फिल्म अभिनेता से राजनेता बने थलपति विजय की रैली में भगदड़ मच गई। इस हादसे में 40 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई, जबकि 100 से ज्यादा लोग घायल हो गए। मृतकों में

महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। इस घटना ने पूरे राज्य को झकझोर दिया। दरअसल, विजय के आगमन में घंटों की देरी के चलते भीड़ बेकाबू हो गई थी। हाई कोर्ट ने भी ळश्ङ और उसके नेता विजय को लापरवाह बताया था। इस हादसे ने न सिर्फ विजय की पार्टी टीवीके की छवि को नुकसान पहुंचाया था बल्कि राजनीतिक रैलियों में सुरक्षा को नजरअंदाज करने लापरवाही को भी उजागर किया था।

संगारेड्डी फार्मा फैक्ट्री ब्लास्ट

30 जून को तेलंगाना के संगारेड्डी जिले में हुए एक हादसे ने न सिर्फ तेलंगाना बल्कि पूरे देश को हिलाकर रख दिया, जब इस घटना में 46 लोगों की मौत हो गई और 33 लोग घायल हो गए। दरअसल, संगारेड्डी जिले के पाशमिला राम में सिगाची इंडस्ट्रीज लिमिटेड के कारखाने में विस्फोट के बाद आग लग गई। विस्फोट इतना भीषण था कि पूरी इमारत ढह गई। प्रारंभिक जांच में सुरक्षा प्रोटोकॉल का उल्लंघन और खतरनाक रसायनों के असुरक्षित भंडारण को हादसे का मुख्य कारण बताया गया। इस घटना ने देश की फार्मा और रासायनिक औद्योगिक इकाइयों में कर्मचारी सुरक्षा और औद्योगिक मानकों के पालन में गंभीर खामी को भी उजागर किया।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन भगदड़

प्रयागराज महाकुंभ के दौरान जब ट्रेनों में तिल धरने की जगह नहीं थी तब 15 फरवरी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म पर अत्यधिक भीड़ के कारण भगदड़ मच गई। इस हादसे में 18 लोगों की मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हो गए।

घटना की जांच में सामने आया कि एक ट्रेन के अचानक प्लेटफॉर्म बदल दिए जाने और यात्रियों द्वारा जल्दबाजी में प्लेटफॉर्म पार करने के चलते भगदड़ मची और यह हादसा हो गया। इस हादसे ने रेलवे स्टेशनों पर भीड़ प्रबंधन और बुनियादी ढांचे को तत्काल मजबूत बनाने की आवश्यकता को उजागर किया।

मध्य प्रदेश के 21 मजदूरों की मौत

गुजरात में 1 अप्रैल 2025 को बनासकांठा जिले के दीसा में एक अवैध पटाखा फैक्ट्री में बॉयलर फटने से भीषण आग लग गई, जिसमें मध्य प्रदेश के 21 मजदूरों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। धमाका इतना तेज था कि फैक्ट्री ढह गई। यह घटना अवैध फैक्ट्री और सुरक्षा मानकों की अनदेखी का मामला था, क्योंकि इस गोदाम का लाइसेंस भी समाप्त हो चुका था।

इनके अलावा मुंबई लोकल ट्रेन हादसा, छत्तीसगढ़ में ट्रेन दुर्घटना, राजस्थान में झालावाड़ जिले के पिप्लोदी में स्कूल छत गिरना और मासूमों की मौत, केदारनाथ हेलीकॉप्टर हादसा, तेलंगाना सुरंग हादसा जैसी घटनाएं भी हुई। हर घटना अपने पीछे कई सवाल भी छोड़ गई। 2025 की ये दुखद घटनाएं देश को याद दिलाती हैं कि तीव्र विकास के साथ-साथ सुरक्षा और नियामक अनुपालन सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। चाहे वह भीड़ प्रबंधन हो, औद्योगिक सुरक्षा हो, या प्राकृतिक आपदा से निपटने की तैयारी हो, इन त्रासदियों से सबक लेकर ही हम भविष्य में ऐसी जानलेवा दुर्घटनाओं को रोक सकते हैं।

मानवेंद्र शर्मा

उन्मादी भीड़ की हिंसा में खत्म हो गया दीपूचंद्र दास

बांग्लादेश में हत्या से शर्मसार हुई इंसानियत

बांग्लादेश के मयमनसिंह में 25 वर्षीय हिंदू युवक दीपू चंद्र दास की भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या की घटना ने पूरे क्षेत्र को झकझोर दिया है। दीपूचंद्र दास का कसूर सिर्फ इतना बताया गया कि उसने ईशनिंदा की थी। इस आरोप में उसे कानून के हवाले करने के बजाय उग्र भीड़ ने खुद 'फैसला' सुना दिया। यह घटना न केवल एक व्यक्ति की हत्या है, बल्कि भय, असहिष्णुता और टूटते सामाजिक ताने-बाने की भयावह तस्वीर भी है। दीपू चंद्र दास हिंदू समुदाय से संबंध रखता था और मयमनसिंह के स्क्वायर मास्टरबारी इलाके में रहता था। वह पायनियर निट कंपोजिट फैक्ट्री में मजदूरी करता था। सीमित आमदनी के बावजूद वह अपने परिवार का सहारा था और सामान्य युवाओं की तरह बेहतर भविष्य का सपना देख रहा था। किसी ने नहीं सोचा था कि रोजी-रोटी कमाने वाला यह युवक अचानक भीड़ की हिंसा का शिकार बन जाएगा।

ईशनिंदा का आरोप और भड़कती भीड़

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, पैगंबर मोहम्मद के बारे में कथित आपत्तिजनक टिप्पणी के आरोप के बाद इलाके में तनाव फैल गया। हालात इतने बिगड़े कि गुस्साई भीड़ ने दीपू को घेर लिया और बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया। मौके पर कानून व्यवस्था पूरी तरह नाकाम साबित हुई और कुछ ही देर में उन्मादी भीड़ ने अपने क्रूर तरीके से दीपू की जान ले ली। उन्मादी भीड़ के इस कृत्य की सर्वत्र निंदा की गई, लेकिन इंसानियत को झकझोर देने वाली यह बात पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देशों के लिए नई नहीं है।

मौत के बाद भी नहीं थमी क्रूरता

भालुका मॉडल पुलिस स्टेशन के इंस्पेक्टर (जांच) अब्दुल मलिक के अनुसार, हत्या के बाद भीड़ ने दीपू के शव को ढाका-मयमन सिंह राजमार्ग के किनारे फेंक दिया और उसमें आग लगा दी। इससे सड़क के दोनों ओर यातायात ठप हो गया। अमानवीयता की हद तब पार हो गई, जब अधजले शव को पेड़ से बांधकर दोबारा जलाया गया। इस वीभत्स दृश्य ने पूरे इलाके को दहशत में डाल दिया।

सोशल मीडिया से मिली मौत की खबर

दीपू के पिता रविलाल दास के लिए यह हादसा दोहरी त्रासदी बनकर आया। उन्होंने बताया कि उन्हें बेटे की मौत की जानकारी किसी प्रशासनिक सूचना से नहीं, एक पिता के लिए अपने बेटे की इस तरह हत्या की तस्वीरें और खबरें देखना असहनीय पीड़ा से कम नहीं। परिवार सदमे में है व न्याय की आस लगाए बैठा है।

7 आरोपी गिरफ्तार, सरकार का बयान

घटना के बाद रैपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) ने कार्रवाई करते हुए सात लोगों को गिरफ्तार किया है। अंतरिम सरकार ने बताया कि आरएबी-14 ने अलग-अलग स्थानों पर अभियान चलाकर इन गिरफ्तारियों को अंजाम दिया। मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली सरकार ने स्पष्ट किया है कि इस जघन्य अपराध के दोषियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

गिरफ्तार संदिग्ध आरोपियों की पहचान

पुलिस के अनुसार गिरफ्तार किए गए आरोपियों में मो. लिमोन सरकार, मो. तारेक हुसैन, मो. माणिक मिया, इरशाद अली, निजुम उद्दीन, अलोमगीर हुसैन और मोहम्मद मिराज हुसैन एकॉन शामिल हैं। सभी आरोपियों की उम्र 19 से 46 वर्ष के बीच बताई गई है।

कानून बनाम भीड़: सबसे बड़ा सवाल

दीपू चंद्र दास की हत्या यह सवाल छोड़ जाती है कि क्या आरोपों के आधार पर किसी को मार डालना जायज हो सकता है? यह घटना बताती है कि जब कानून कमजोर पड़ता है और अफवाहें मजबूत होती हैं, तब सबसे पहले शिकार बनते हैं गरीब, कमजोर और हाशिए पर खड़े लोग।

गरीबी, इलाज और व्यवस्था के बीच पिसती इंसानियत

जब एक बेबस पिता सब कुछ हार गया!

काशी शर्मा

राम लाल का कहना है कि इलाज के दौरान उन्होंने करीब तीन लाख रुपये अस्पताल को अलग-अलग किश्तों में दिए। यह रकम उनके लिए आसान नहीं थी। हर रुपये के पीछे कर्ज और मजबूरी थी। इसके बावजूद बेटे की मौत के बाद अस्पताल प्रबंधन ने उनसे तीन लाख दस हजार रुपये और मांगे।

उत्तर प्रदेश के बदायूं से आई यह कहानी, किसी खबर से कहीं अधिक है। यह एक पिता की टूटती हुई उम्मीदों की दास्तान है। रामलाल ने बेटे की सांसें बचाने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। मकान गिरवी रखा। कर्ज लिया, पर किस्मत ने साथ नहीं दिया और अंततः जिगर का टुकड़ा चला गया।

बेटे की देह के लिए एक पिता की लड़ाई

बदायूं की यह घटना हमारी सामाजिक संवेदनाओं का आईना है। दातागंज क्षेत्र के नगरीया गांव निवासी राम लाल पेशे से एक साधारण मजदूर हैं। उन्होंने अपने 24 वर्षीय बेटे धर्मवीर की जान बचाने के लिए जो कुछ भी था, सब झोंक दिया। गहने बिके, कर्ज लिया गया, रिश्तेदारों और गांव वालों से मदद मांगी गई। यहां तक कि घर भी गिरवी रख दिया गया। रामलाल को उम्मीद थी कि

उनके जिगर का टुकड़ा बच जाएगा, लेकिन किस्मत ने साथ नहीं दिया।

इलाज ने छीनी जमीन, मौत ने तोड़ी हिम्मत

राम लाल का कहना है कि इलाज के दौरान उन्होंने करीब तीन लाख रुपये अस्पताल को अलग-अलग किश्तों में दिए। यह रकम उनके लिए आसान नहीं थी। हर रुपये के पीछे कर्ज और मजबूरी थी। इसके बावजूद बेटे की मौत के बाद अस्पताल प्रबंधन ने उनसे तीन लाख दस हजार रुपये और मांगे। यह मांग उनके टूटे हुए हौसले पर आखिरी वार थी।

'भगवान को कुछ और ही मंजूर था'

राम लाल जब बेटे की बात करते हैं तो शब्द थम जाते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने बेटे को बचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जो था, सब दे दिया। उन्हें भरोसा था कि बेटा लौट आएगा, लेकिन भगवान ने कुछ और ही तय कर रखा था। यह कहते हुए उनकी आंखें भर आती हैं और आवाज कांपने लगती है।

शव के लिए सड़क पर उतरा पिता

आरोप है कि पूरा बिल न चुका पाने पर अस्पताल ने शव सौंपने से इनकार कर दिया। इसी मजबूरी में राम लाल सड़क पर उतरे और लोगों से हाथ जोड़कर मदद मांगी। एक पिता का यूं भीख मांगना समाज को झकझोर देने वाला दृश्य था। यह पल कैमरे में कैद हुआ और सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। राम लाल स्वीकार करते हैं कि उन्हें यह कदम उठाना पड़ा। वे कहते हैं कि एक पिता के लिए इससे बड़ा अपमान कुछ नहीं हो सकता, लेकिन बेटे की देह पाने के लिए उन्हें यह सहना पड़ा।

गांव वालों ने निभाया इंसानियत का धर्म

नगरीया गांव के लोगों ने इस परिवार को अकेला नहीं छोड़ा। ग्रामीण प्रेमपाल बताते हैं कि पूरे गांव ने अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार मदद की। शायद ही कोई घर होगा, जिसने इस परिवार के लिए हाथ न बढ़ाया हो। असगर अली का कहना है कि इलाज के दौरान अस्पताल में लगातार पैसों का दबाव बनाया गया व बेटे की मौत के बाद भी परिवार को मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया।

हादसे से अस्पताल तक की कहानी

धर्मवीर, बदायूं जिले के दातागंज क्षेत्र के नगरीया गांव का रहने वाला था। एक दिसंबर को वह सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हुआ। पहले उसे बदायूं के अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालत बिगड़ने पर बरेली के निजी अस्पताल में रेफर किया गया। करीब दो सप्ताह तक इलाज चला। सिर में गंभीर चोट के कारण ऑपरेशन भी किया गया, लेकिन आखिरकार जिंदगी की जंग हार गई।

अस्पताल का पक्ष और उसका दावा

अस्पताल प्रबंधन सभी आरोपों से इनकार करता है। उनका कहना है कि इलाज पूरी तरह मुफ्त था और मौत के बाद पूरा बिल माफ कर दिया गया था। अस्पताल स्टाफ का दावा है कि परिवार से एक रुपया भी नहीं लिया गया और कुछ दवाइयां भी निःशुल्क दी गईं। उनके अनुसार, अस्पताल को बदनाम करने के लिए साजिश रची गई।

सच क्या है, यह कौन बताएगा?

एक तरफ अस्पताल प्रबंधन के दावे हैं, तो दूसरी तरफ एक पिता की बेबसी और गांव वालों की गवाही। दोनों कहानियों के बीच गहरी खाई है। सवाल यह है कि अगर बिल माफ था, तो पिता को भीख क्यों मांगनी पड़ी? और अगर पैसे लिए गए थे, तो उनका हिसाब कहां है?

इंसाफ सिर्फ रामलाल के लिए नहीं

आज राम लाल न्याय की मांग कर रहे हैं। यह मांग सिर्फ उनके बेटे के लिए नहीं है, बल्कि उन तमाम गरीब परिवारों के लिए है जो इलाज और व्यवस्था के बीच पिस जाते हैं। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या किसी पिता को अपने बेटे की देह पाने के लिए भीख मांगनी चाहिए? और अगर नहीं, तो जिम्मेदारी किसकी है?

यदि महाकुंभ आस्था का महासागर, तो माघ मेला साधना की शांत सरिता

माघ मेला : साधना, संयम और लोक आस्था की जीवंत सनातन परंपरा

संतोष कुमार तिवारी

भव्य और दिव्य महाकुंभ 2025 के ऐतिहासिक, अविस्मरणीय आयोजन के बाद प्रयागराज केवल एक तीर्थनगरी नहीं, बल्कि वैश्विक आध्यात्मिक चेतना का स्थायी केंद्र बनकर उभरा है। संगम तट पर करोड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति, अखाड़ों की परंपरागत पेशवाई, संत-समागम और आधुनिक व्यवस्थाओं के सफल समन्वय ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की धार्मिक परंपराएं न केवल जीवित हैं, बल्कि समय के साथ और भी ज्यादा सशक्त हो रही हैं।

अनादि काल से चली आ रही यह परंपरा, अनवरत अपनी धुन में आगे बढ़ रही है। मौजूदा समय में एक बार फिर संगम का तट लाखों-लाख श्रद्धालुओं के आगमन का साक्षी बनने जा रहा है। महाकुंभ 2025 के बाद माघ मेला अब केवल एक नियमित आयोजन नहीं, बल्कि उस विराट आस्था का सांस्कृतिक और साधनामय विस्तार भी बनता जा रहा है। महाकुंभ जहां आस्था की विराटता, जनसमुद्र व उत्सवधर्मिता का प्रतीक है, वहीं माघ मेला उसका संयमित, शांत व आत्मकेंद्रित स्वरूप है। यह, वह अवसर है, जहां साधना उत्सव से बड़ी हो जाती है धर्म जीवन के व्यावहारिक अनुशासन में ढलता दिखाई देता है।

ऐतिहासिक निरंतरता : हजारों वर्षों की परंपरा

माघ मेले की परंपरा वैदिक काल से जुड़ी मानी जाती है। पुराणों, धर्मग्रंथों और ऐतिहासिक संदर्भों में माघ मास में प्रयागराज संगम पर स्नान, दान और तप को विशेष पुण्यफलदायी बताया गया है। कल्पवास की परंपरा माघ मेले की आत्मा है। हजारों श्रद्धालु एक महीने तक संगम तट पर निवास कर ब्रह्ममुहूर्त में गंगा स्नान, सात्विक आहार, यज्ञ, हवन और जप-तप, संयमित दिनचर्या और सेवा के माध्यम से आत्मशुद्धि का मार्ग अपनाते हैं। यही कारण है कि माघ मेला आज भी उस सनातन जीवन-दर्शन का जीवंत प्रयोगशाला कहा जाता है, जहां धर्म ग्रंथों से उतरकर जीवन में दिखाई देता है।

महाकुंभ 2025 के बाद बदला परिदृश्य

महाकुंभ 2025 ने धार्मिक आयोजनों के स्वरूप को नई ऊंचाई दी। बेहतर घाट, स्थायी और अस्थायी पुल, डिजिटल सूचना तंत्र, स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य सेवाएं और सुरक्षा व्यवस्था ने श्रद्धालुओं के अनुभव को पूरी तरह बदल दिया। इसका सीधा प्रभाव माघ मेला 2026 पर भी पड़ता दिखाई दे रहा है। श्रद्धालुओं की संख्या में निरंतर वृद्धि, विशेषकर शहरी मध्यमवर्ग, युवा वर्ग और शिक्षित और प्रोफेशनल वर्ग का माघ मेले की ओर रुझान इस बात का संकेत है कि अब धर्म केवल परंपरा नहीं, बल्कि मानसिक शांति और जीवन-संतुलन का साधन बन रहा है।

सरकारी नीति : आस्था के साथ सुशासन

योगी आदित्यनाथ सरकार ने प्रयागराज को आस्था आधारित विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया है। बीते वर्षों में गंगा और संगम की स्वच्छता, स्थायी घाटों और कॉरिडोर का विकास, संतों और अखाड़ों के लिए सुव्यवस्थित भूमि आवंटन, कल्पवासियों के लिए स्वास्थ्य, जल और विद्युत सुविधाएं, जैसे कदमों ने माघ मेले को अधिक गरिमामय और सुरक्षित बनाया है। सरकार का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि माघ मेला केवल धार्मिक आयोजन न होकर एक सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था का भी महत्वपूर्ण आधार बने। इससे प्रयागराज और आसपास के क्षेत्रों में रोजगार, हस्तशिल्प, लोकसंस्कृति और सेवा-क्षेत्र को भी बल मिल रहा है।

माघ मेला 2026

प्रयागराज के माघ मेला 2026 में बहुत कुछ होगा खास

- 44 दिन का मेला होगा
- क्षेत्रफल 800 हेक्टेयर
- 7 सेक्टरों का संख्या
- 9 पीपा पुल का निर्माण
- 2.8 कि.मी लम्बा स्नान घाट
- 42 पार्किंग स्थल
- 4599 संस्थाओं की संख्या
- रेपिडो बाइक सेवा
- गोल्फ कार्ट वाली गाड़ियां

विदेशियों की बढ़ती भागीदारी और आकर्षण

महाकुंभ 2025 के दौरान बड़ी संख्या में विदेशी श्रद्धालु, योग साधक, शोधार्थी और डॉक्यूमेंट्री निमार्ता प्रयागराज पहुंचे। इसके बाद माघ मेले को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रुचि और बढ़ी है।

विदेशी नागरिक विशेष रूप से कल्पवास जीवनशैली, अखाड़ों की परंपरा, भारतीय दर्शन, योग और ध्यान, गंगा के तट पर साधना को नजदीक से समझना चाहते हैं। उनके लिए माघ मेला भारत की उस आत्मा का परिचय है, जहां आध्यात्मिकता प्रदर्शन नहीं, बल्कि साधना है। यह प्रवृत्ति संकेत देती है कि आने वाले वर्षों में माघ मेला भारत के सॉफ्ट पावर का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता

माघ मेला भारतीय समाज की समरसता का जीवंत उदाहरण है। संगम के घाट पर संत और गृहस्थ, ग्रामीण और शहरी और भारतीय और विदेशी एक ही परंपरा में बंधे दिखाई देते हैं। यहां कोई वीआईपी संस्कृति नहीं, कोई भेदभाव नहीं–सभी गंगा की धारा में समान हैं।

यह मेला भारत की उस सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करता है, जहां धर्म व्यक्ति को जोड़ता है, तोड़ता नहीं। यह आयोजन न सिर्फ

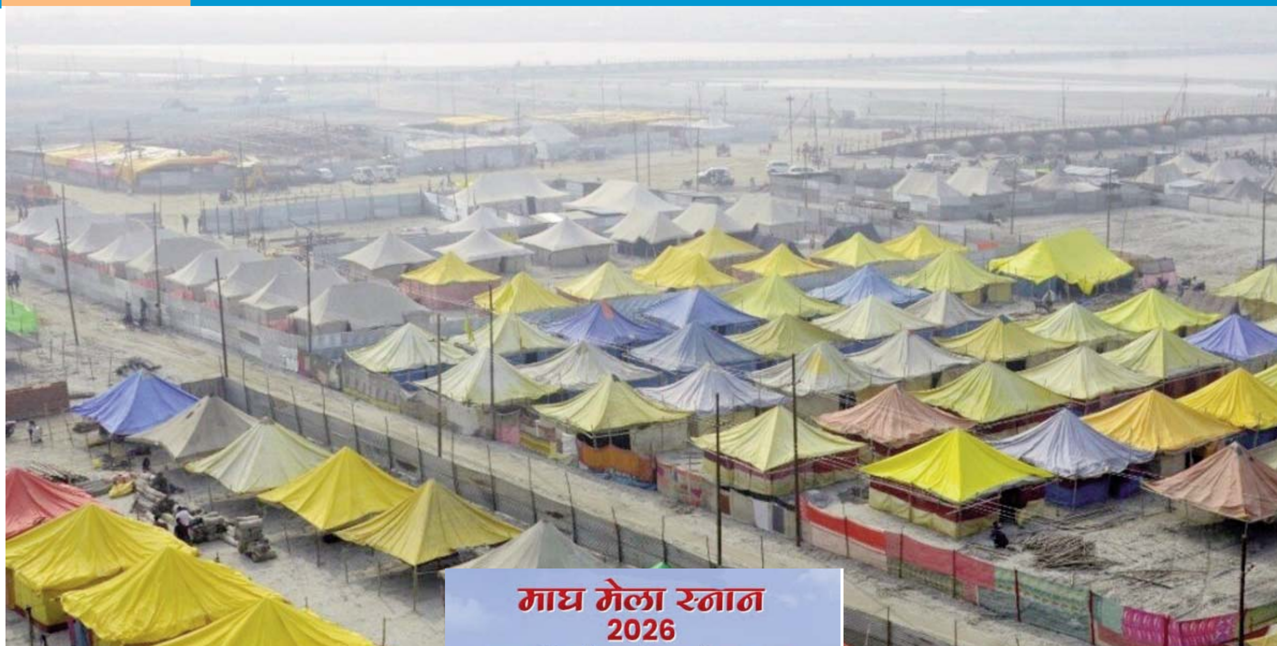

हमारी आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह साबित करता है कि सभी भारतीय और सभी के लिए यहां की सामाजिक व्यवस्था एक है। संगम तट पर पहुंचने के बाद छोटा-बड़ा का कोई भेद नहीं रह जाता। यहां हर कोई सिर्फ और सिर्फ श्रद्धालु की नजर आता है।

गंगा तीरे साधना का स्थायी उत्सव

महाकुंभ 2025 के बाद माघ मेला 2026 की बढ़ती लोकप्रियता यह प्रमाणित करती है कि भारत की आस्था क्षणिक नहीं, सतत है। यदि महाकुंभ आस्था का महासागर है, तो माघ मेला साधना की वह शांत सरिता है, जिसमें उतरकर व्यक्ति स्वयं को पहचानता है। योगी सरकार की नीतिगत स्पष्टता, देशवासियों की गहराती श्रद्धा और विदेशियों की बढ़ती आध्यात्मिक रुचि—इन तीनों के संगम से माघ मेला आने वाले समय में न केवल प्रयागराज, बल्कि भारत की सनातन परंपरा का वैश्विक प्रतीक बनकर उभरेगा। यह मेला हमें स्मरण कराता है कि धर्म केवल विश्वास नहीं, बल्कि संयम, अनुशासन और आत्मोन्नति का मार्ग है—यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

सुरक्षित, सुगम आध्यात्मिक अनुभव

माघ मेला को लेकर प्रदेश सरकार और प्रयागराज जिला प्रशासन ने तैयारियों की रूपरेखा तय कर दी है। बढ़ती श्रद्धालु संख्या, देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों और कल्पवासियों को देखते हुए इस बार माघ मेले को सुरक्षा, स्वच्छता और सुव्यवस्था के नए मानकों के साथ आयोजित करने की योजना बनाई गई है। योगी आदित्यनाथ सरकार के निर्देश पर माघ मेला-2026 को केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सुरक्षित, सुगम और आध्यात्मिक अनुभव के रूप में विकसित किया जा रहा है। माघ मेला-2026 में अनुमानित श्रद्धालुओं की संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रशासन ने बहुस्तरीय भीड़ प्रबंधन योजना तैयार की है। संगम क्षेत्र को सेक्टर और जोन में विभाजित किया जाएगा। प्रमुख स्नान पर्वों पर वन-वे मूवमेंट सिस्टम लागू रहेगा। ड्रोन और सीसीटीवी कैमरों से 24 घंटे निगरानी, कंट्रोल रूम से रियल-टाइम मॉनिटरिंग और आपात स्थिति के लिए त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) तैनात रहेगा। भीड़ के दबाव को संतुलित करने के लिए वैकल्पिक स्नान घाटों का भी प्रभावी उपयोग किया जाएगा।

रेलवे और परिवहन : आवागमन पर विशेष फोकस

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए रेलवे और परिवहन विभाग के साथ समन्वय कर विस्तृत योजना बनाई जा रही है। माघ मेले की अवधि में विशेष मेला स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी। प्रयागराज जंक्शन, प्रयागराज छिवकी और रामबाग स्टेशनों पर अतिरिक्त व्यवस्थाएं की गई हैं। प्रमुख मार्गों पर शटल बस सेवा, पार्किंग स्थलों से घाटों तक ई-रिक्शा और बस सुविधा और भारी वाहनों के लिए डायवर्जन प्लान बनाया गया है। इससे श्रद्धालुओं को जाम और अव्यवस्था से राहत मिलने की उम्मीद है। संगम समेत सभी प्रमुख स्नान घाटों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। घाटों का समय से पहले सुदृढ़ीकरण और मरम्मत, एंटी-स्किड सतह और रेलिंग की व्यवस्था, जल पुलिस और गोताखोरों की तैनाती, महिलाओं, बुजुर्गों और दिव्यांग श्रद्धालुओं के लिए विशेष सहायता केंद्र, घाटों पर पीने के पानी और प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा की जा रही है। प्रशासन का लक्ष्य है कि हर श्रद्धालु सुरक्षित और श्रद्धापूर्वक स्नान कर सके।

(लेखक युवा लेखक, चिंतक व राष्ट्रवादी विचारक हैं)

हर्षवर्धन त्रिपाठी

जन्म शताब्दी वर्ष पर विशेष

आधुनिक भारत के असल निर्माता अटल बिहारी वाजपेयी

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को सब कुछ शुरू से शुरू करना था और यही वजह रही कि, उन्हें आधुनिक भारत का निमार्ता कहा जाता है। एक तरह से लंबे समय तक नेहरू-गांधी परिवार के सत्ता में रहने की वजह से आधुनिक भारत के निमार्ता के तौर पर जवाहर लाल नेहरू को स्थापित कर दिया गया। स्वयं अटल बिहारी वाजपेयी भी जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व के बड़े प्रशंसक थे। अटल बिहारी वाजपेयी का अधिकांश समय राजनीति में विपक्षी नेता की ही भूमिका में रहा। उस भूमिका में भी अटल बिहारी वाजपेयी का अधिकांश समय सत्ता के साथ संघर्ष में ही बीता। जवाहर लाल नेहरू का प्रशंसक होने के बावजूद अटल बिहारी वाजपेयी मूल रूप से समाजवादी नीतियों के समर्थक नहीं थे। अटल जी के व्यक्तित्व के इस पहलू की चर्चा न्यूनतम होती है। सही मायनों में अटल बिहारी वाजपेयी ने आधुनिक भारत को तैयार करने वाली नीतियों को लागू किया। बिहारी वाजपेयी की नीतियां नेहरू जी की समाजवादी नीतियों में कराह रहे देश को बाहर निकालकर एक आधुनिक भारत बनाने वाली थीं। अटल बिहारी वाजपेयी के लिए एक संयोग अच्छा बना था कि, कांग्रेस के ही नेता के तौर पर प्रधानमंत्री बने पीवी नरसिंहा राव ने देश को नेहरू-गांधी परिवार के चंगुल से निकालने के साथ ही नेहरूवादी समाजवादी नीतियों से भी बाहर निकालने के बड़े प्रयास की शुरूआत कर दी थी।

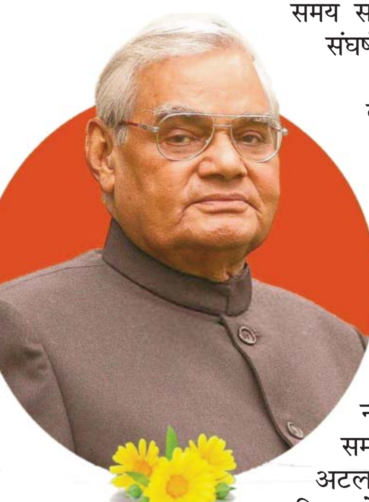

पीवी नरसिंहा राव ने परमाणु परीक्षण के साथ ही अटल बिहारी वाजपेयी के जिम्मे आधुनिक भारत तैयार करने के लिए हर जरूरी सुधार करने का महत्वपूर्ण कार्य छोड़ा था। पीवी नरसिंहा राव के वित्त मंत्री रहे डॉक्टर मनमोहन सिंह की प्रधानमंत्री के तौर पर सारी प्रतिष्ठा अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में लिए गए बड़े निर्णयों पर ही टिकी रही। मनमोहन सिंह के अपने कार्यकाल की कोई बड़ी उपलब्धि नहीं रही। उपलब्धि के नाम पर सिर्फ और सिर्फ हजारों करोड़ रुपये की कृषि कर्ज माफी रही और माना जाता है कि, यूपीए का दूसरा कार्यकाल आने में सबसे बड़ा योगदान उसी कृषि कर्ज माफी का था। इसके अलावा मनमोहन सिंह की सरकार सिर्फ और सिर्फ बड़े घोटालों के लिए ही जानी जाती रही। जानकार यह भी कहते हैं कि, अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में जितने कार्य हुए उसका आधार यूपीए के पहले कार्यकाल में मजबूती से बना रहा, लेकिन यूपीए की सरकार में कोई नीतिगत निर्णय न होने से भारत की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि, मनमोहन सिंह की सरकार के कार्यकाल को नीतिगत विकलांगता वाले दशक के तौर पर जाना जाता है जबकि, अटल बिहारी वाजपेयी ने गठजोड़ की सरकार चलाते हुए भी इतने शानदार तरीके से आर्थिक बुनियाद पक्की की कि, उसी पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत को विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने में कामयाब हो रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अकसर कहते हैं कि, हम जिस परियोजना का शिलान्यास करते हैं, उसका उद्घाटन भी करते हैं। नरेंद्र मोदी के दस वर्षों के कार्यकाल में देश ने आर्थिक सुधारों और परियोजनाओं को बहुत तेजी से जमीन पर उतरते देखा है, लेकिन इसकी शुरूआत अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में हो गई थी। यह अलग बात थी कि, 2004 में इंडिया शाइनिंग जैसे अभियान को देश की जनता ने उस सन्दर्भ में स्वीकार नहीं किया और अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार चली गई। बहुत कम समय मिलने के बावजूद अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने भारतीय अर्थव्यवस्था को द्रुत गति देने के लिए जो कार्य किए, उन्हें इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया गया है। देश के हर हिस्से को जोड़ने वाली स्वर्णिम चतुर्भुज योजना का नामकरण भी उस लिहाज से प्रासंगिक दिखता है। यह प्रश्न हर भारतवासी के मन में आना चाहिए कि, प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी के पहले तक किसी प्रधानमंत्री की प्राथमिकता में यह क्यों नहीं रहा कि, देश के हर हिस्से को शानदार सड़कों से जोड़ा जाना चाहिए। स्वर्णिम चतुर्भुज योजना को लागू करना आसान कार्य नहीं था, लेकिन उसे अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने कर दिखाया और देश को तेज रफ्तार से दौड़ने की आदत उसी समय लगी, उसके पहले तक देश सुस्ताते हुए समाजवादी नीतियों के आगोश में फंसा हुआ चलता चला जा रहा था। फंसा समाजवादी नीतियों के आगोश में था और उसे अंग्रेजीदां अंदाज वाले हमारे प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू जी के समय में ही हिन्दू ग्रोथरेट कह दिया गया। हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय, सिर्फ अटल जी की कविता नहीं थी।

(लेखक एचवी टीवी के संपादक एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

गोरखनाथ मठ भारत की राजनीति व सामाजिक समरसता का केंद्र बिंदु

सुरेश बहादुर सिंह

उत्तर प्रदेश के राजनीतिक इतिहास में सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने का रिकॉर्ड बनाने वाले गोरखनाथ पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने जब अपना सब कुछ छोड़कर नाथ पंथ की दीक्षा ली थी तो किसी ने यह नहीं सोचा था कि यह सन्यासी बालक देश के सबसे बड़े जनसंख्या वाले प्रदेश का एक दिन नेतृत्व करेगा। उप्र के राजनीतिक इतिहास में आज तक कोई भी मुख्यमंत्री ऐसा नहीं हुआ जिसने अपना 5 साल का एक कार्यकाल पूर्ण किया हो व दूसरी बार लगातार सत्ता में वापस लौट कर आया हो।

धारा के विपरीत योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने ऐसा करके दिखाया और 2017 से 2022 तक का कार्यकाल पूरा करने के बाद 2022 के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर सत्ता में लौट कर आए निश्चित रूप से यह उनके मुख्यमंत्री के रूप में पिछले पांच साल के कामकाज पर उत्तर प्रदेश के जनता की स्वीकार्यता थी। परंतु हम सभी जानते हैं कि राजनीति कितनी निर्मम होती है यह उत्तर प्रदेश के राजनीतिक हालात को देखकर समझ जा सकता है अपना घर,परिवार,माता-पिता, भाई -बहन सब को छोड़कर नाथ पंथ की दीक्षा लेने वाले और बाद में गोरखनाथ पीठ के पीठाधीश्वर बनने वाले और अब उत्तर प्रदेश का नेतृत्व कर रहे योगी आदित्यनाथ के भी ऊपर लगातार जातिवाद के आरोप घृणित मानसिकता के लोगों के द्वारा लगाए जाते रहते हैं लोगों को यह नहीं पता है कि नाथ संप्रदाय की दीक्षा लेने के पहले कितनी कठिन साधना से गुजरना पड़ता है और नाथ संप्रदाय में आ जाने के बाद व्यक्ति का अपना कुछ नहीं रह जाता घर परिवार माता-पिता जाति धर्म सब कुछ छूट जाता है सिर्फ व्यक्ति नाथ का होकर के रह जाता है।

उत्तर प्रदेश के राजनीतिक हालात को देखते हुए यह पुस्तक तमाम चीजों को स्पष्ट करती है। योगी आदित्यनाथ जी महाराज जिस पीठ के पीठाधीश्वर हैं उस गोरखनाथ पीठ ने समाज को जोड़े रखने, समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े हुए व्यक्ति को हर अधिकार दिलाने के लिए या फिर सामाजिक समरसता के लिए क्या किया है,यह लोगों को पता चलना चाहिए।

योगी आदित्यनाथ जी महाराज के दादा गुरु ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज का राम मंदिर आंदोलन में योगदान रहा हो या फिर उनके गुरु ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ महाराज के द्वारा सामाजिक समरसता को मजबूत करने के लिए किए गए आंदोलन इसका जिक्र होना चाहिए और समाज को यह पता चलना चाहिए कि 9 नवंबर 1989 को राम मंदिर शिलान्यास के दौरान बिहार के दलित समाज से आने वाले कामेश्वर चौपाल से पहली ईंट रखवाने का फैसला महंत अवेद्यनाथ जी महाराज का ही था। महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने 1981 में दलित भाइयों के धर्मांतरण के विरोध में ही राजनीति को ठोकर मार दिया था और सामाजिक समरसता के लिए काम करना शुरू कर दिया, महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने सबसे निचले तबके से आने वाले चांडाल कहे जाने वाले बनारस के डोम राजा के घर जाकर भोजन किया और एक संदेश दिया की सभी एक ही ईश्वर की संतान है किसी के बीच कोई भेदभाव नहीं है। यह उद्देश्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज का था, और उन्ही के शिष्य योगी आदित्यनाथ इस समय उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं,और अपने गुरु व दादा गुरु की विचारधारा के साथ काम कर रहे हैं और उसी विचारधारा को आगे बढ़ा रहे हैं।

बहुत कम लोग जानते हैं कि आज गोरखनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी कमलनाथ जी दलित समाज से आते हैं, करीब एक दशक से मंदिर के मीडिया प्रभारी विनय गौतम जी है।हालांकि नाथ पंथ में आने के बाद किसी की कोई जाति नहीं रह जाती लेकिन कुछ चीजों का स्पष्ट हो जाना अति आवश्यक होता है आज भी गोरखपुर मंदिर के प्रांगण में मुसलमानों की दुकानें सर्वाधिक है। बहुत कम लोग जानते हैं कि 1932 में महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान की स्थापना के बाद वहां पर दलित और पिछड़ों के लिए विशेष व्यवस्था दिग्विजय नाथ जी महाराज के द्वारा की गई थी ताकि सामाजिक समरसता को मजबूत किया जा सके।

1959 में आदिवासियों की शिक्षा की हेतु विद्यालय की स्थापना दिग्विजय नाथ जी महाराज के द्वारा की गई थी। महंत अवेद्यनाथ जी महाराज हमेशा से कहते रहे कि हर व्यक्ति वह किसी भी समाज से आता हो सभी को वेद की ऋचाओं को पढ़ने का अधिकार है। महंत अवेद्यनाथ जी महाराज डॉक्टर अंबेडकर की तारीफ करते थे और कहते थे कि यदि आज दलित समाज उद्वेलित है तो उसके पर्याप्त कारण हैं। किसी के साथ भी छुआछूत होगा तो उसका प्रतिकार भी वह करेगा। कुल मिलाकर पुस्तक का उद्देश्य है कि गोरखनाथ मठ का भारतीय राजनीति में क्या स्थान रहा है और उसकी सामाजिक समरसता और सहभोज आदि की प्रकिया कैसे समाज को जोड़ने का काम कर रही है यह आमजन को पता चलना चाहिए। इसके लिए सौरभ सोमवंशी व रीना एन सिंह को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

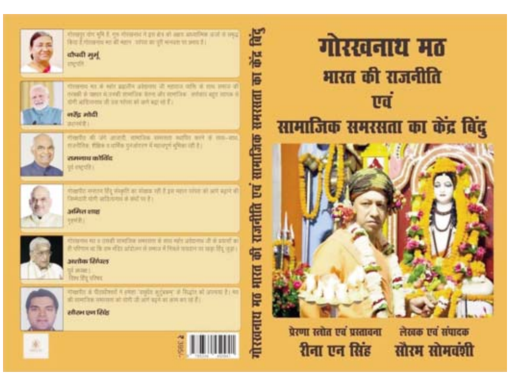

पंकज प्रसून

ट्रेन लेट होने के भइया फायदे भी बहुत

सार्वजनिक प्रवृत्ति की ट्रेन अब आध्यात्मिक प्रवृत्ति की हो गयी है। उसने धुंध और धूप के भेद को मिटा दिया है। ट्रेन ने यह सिखाया है की मौसम के बदलने के साथ मिजाज नहीं बदलना चाहिए। नियत समय पर न पहुंचना ही ट्रेन की नियति बन गयी है। चूंकि हमारे अच्छे दिन आ गए हैं इसलिए निगेटिव सोचना बंद कर देना चाहिए। ट्रेन के लेट होने के दुष्परिणामों पर चर्चा करने के बजाय इसके फायदे के बारे में चिंतन करना चाहिए। ट्रेन भविष्यद्रष्टा है। वह समझती है की आज के समय में सरकारी नौकरी का मिलना टेढ़ी खीर है। रिजल्ट आने के बाद भर्ती ही निरस्त कर दी जाती है। इसलिए ट्रेन तमाम छात्रों के एग्जाम छुडवा देती है। मैं खुद जब रेलवे का एग्जाम देने गया था तो ट्रेन के पहुचने से पहले रेलवे वाले एग्जाम करा कर वापस लौट चुके थे। पता चला की वो लोग बस से आये थे।

मेरे मित्र बनवारी ने रिस्क लेकर लव मैरिज की शादी में खासा पैसा लग गया था लेकिन पत्नी ने होनीमून पर चलने की जिद पकड़ ली। बनवारी लाल ने दिमाग लगाया और ट्रेन का टिकट लिया। रेलवे की कृपा से होटल में रूम लेने की नौबत ही नहीं आयी। उसने पत्नी के सामने पानी पी पीकर रेलवे को कोसा लेकिन मन ही मन धन्यवाद दिया। उसने पत्नी को समझाया की इसे ही थ्री डेज फॉर नाईट स्टे मान ले। इसी तरह का किस्सा पोपटलाल का भी है जब वह बोगी में अपनी बारात लेकर जा रहे थे। ट्रेन का एराइवल तक हुआ जब दुल्हन के डिपारचर की बेला आ गयी। मैंने पोपटलाल को ढांढस बंधाते हुए कहा-दुर्घटना से देर भली। पोपटलाल यह बात शादी के 2 महीने बाद ही समझ आ गयी थी।

आजकल मोबाइल कंपनियां दिल खोलकर डेटा लुटा रही हैं। हमारे बैंक भले खाली हो रहे हों लेकिन डेटा बैंक ठाठस भरे हैं। आज के युवा की सबसे बड़ी चुनौती रोजगार पाना नहीं बल्कि रोज 2 जीबी डेटा खत्म करने की है। ट्रेन अगर लेट होगी तो शर्तिया डिजिटल इंडिया का नारा मजबूत होगा। ट्रेन लेट होने पर फेसबुक अपडेट भी खूब होंगे। ट्रेन किसी निर्जन स्थान पर खडी है तो फटाफट दरवाजे पर लटक कर सेल्फी ले डालिए फीलिंग अलोन लिखिए। गंभीर मुद्रा में चेहरे पर परेशानी का भाव लेकर फोटो खींचिए रेल मंत्री को कोसते हुए ट्विट कर डालिये।

बनारस के घाट के किनारे बैठकर साहित्य सृजन तो खूब हुआ लेकिन लेट हो चुकी ट्रेन हमारे चिन्तक को नई ऊंचाइयां प्रदान करती है। ट्रेन में आप एक दोहे लिखने के लिए बैठें,दावा है की महाकाव्य पूरा कर-के ही निकलेंगे। हुआ ट्रेन के एसी कम्पार्टमेंट में हो सकता है आपके अंदर का सुकुमार कवि जाग जाए। प्रकृति प्रेम अंगड़ाइयां लेने लगे और आप पन्त की तरह कह उठें।- प्रथम ट्रेन का आना रंगिणि!,तूने कैसे पहचाना?/ कहां, कहां इस विलम्बिनी ने गाया सिग्नल पर गाना? हो सकता है की जनरल डिब्बे के अंदर की गर्मी के बीच आपका विद्रोही स्वर जाग जाए और आप नागार्जुन की शैली में लिख उठें-ट्रेनों को लड़ते देखा है। क्या पता हास्य कवि के अंदर ओज का ज्वार उमड़ पड़े और लिख दे 'हर एक आउटर पर रूककर उसने कर दिया बवाला था, पप्पू प्रसाद के गदहे से पड़ गया ट्रेन का पाला था। कोई लोक गायिका ड्राइवर को संबोधित करते हुए गा सकती है-रेलिया बैरन पिया को लिए जाय रे। टाइम पर कबहूं न पहुंचाए रे। भारत ही एकलौता ऐसा देश है जहां पूछा जाता है की 8 बजे वाली ट्रेन कितने बजे आयी है। लेकिन ट्रेन लेट होती है तो नेता अफसर,बाबू, चपरासी सब लेट होते हैं। यहां तक की रियायती टिकट लेकर बैठने वाले वृद्ध जनों के लिए भी कोई रियायत नहीं करती। समभाव दिखाती है। सरकार पर भले जनरल की तुलना में आरक्षित वर्ग के प्रति भेदभाव के आरोप लगते हों लेकिन ट्रेन पर ऐसे आरोप कभी नहीं लगे। ट्रेन का जहां तहां खड़े हो जाना ही स्टैंडअप इंडिया है। ट्रेन लेट होती है तो जहरखुरानियों को रोजगार मिलता है। थककर चूर हुए यात्री के पलक झपकते ही टप्पेबाज उसके सामान का बोझ हल्का कर देते हैं। जितना कम सामान रहेगा उतना सफर आसान रहेगा। इसमें मिनिमम गवर्नमेंट मक्सिमम गवर्नमेंट का सिद्धांत छुपा हुआ है।

(लेखक अंतरराष्ट्रीय व्यंग्यकार व कवि हैं)

जान है तो जहान है

एलर्जी: लक्षण बचाव एवं उपचार

डा. पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह

एलर्जी हमारे इम्यूम सिस्टम द्वारा किसी चीज के लिए एब्नॉर्मल रिएक्शन है। यह खाने की चीज, पालतू जानवर, मौसम में बदलाव, खुशबू, धूल, धुआं, दवा यानी किसी भी चीज से हो सकती है। इस स्थिति में हमारा इम्यून सिस्टम कुछ खास चीजों को स्वीकार नहीं कर पाता और नतीजा ऐसे रिऐक्शन के रूप में दिखता है।

एलर्जी के प्रमुख कारण

खाने की चीजों से:- कुछ लोगों को खाने की चीजों से एलर्जी हो सकती है. जिस चीज से एलर्जी है, उसे खाने के बाद जी मिचलाना, शरीर में खुजली होना या पूरे शरीर पर दाने और चकत्ते निकलने जैसी समस्या हो सकती है. आमतौर पर कुछ खाने के बाद 10 मिनट से लेकर आधे घंटे के अंदर एलर्जी के लक्षण उभरने लगते हैं।

धूल:- धूल के कणों में माइक्रोब्स होते हैं जो हमारे आसपास मौजूद रहते हैं. माइक्रोब्स ज्यादा उमस में पनपते हैं. इनसे होनेवाली एलर्जी में आमतौर पर छींकें, आंख और नाक से पानी बहना जैसी दिक्कत होती है।

कीड़े और मच्छर:- ऐसे लोगों को किसी कीड़े के काटने पर स्किन एकदम लाल होकर फूल जाती है। कभी-कभार उल्टी, चक्कर आना और बुखार भी हो सकता है।

खुशबू:- खुशबू भी कई लोगों के लिए एलर्जी का कारण हो सकती है। परफ्यूम, खुशबू वाली मोमबत्तियां, कई तरह के ब्यूटी प्रॉडक्ट आदि की खुशबू से सिरदर्द, जी मिचलाने आदि की समस्या हो सकती है।

पालतू जानवर:- पालतू जानवर भी कई लोगों की एलर्जी का कारण होते हैं। जानवरों के बाल, उनके मुंह से निकलने वाली लार, रूसी आदि से कई लोगों को गंभीर परेशानियां होती हैं।

मौसम:- कई लोगों को किसी खास मौसम से भी एलर्जी होती है। जब मौसम बदलने लगता है तो इन लोगों को गले की खराश, बुखार, नाक बहना, आंखों में जलन जैसी समस्या होती है।

मेटलः- कई लोगों को मेटल जैसे कि गोल्ड या सिल्वर ऑक्सिडाइज्ड जूलरी से एलर्जी होती है तो कुछ को लेदर या सिंथेटिक कपड़ों से।

दवाः- किसी खास दवा से एलर्जी भी काफी लोगों को होती है। अगर उस दवा को लेना जारी रखा जाए तो परेशानी बढ़ सकती है।

घासः-कई बार घास, पेड़ और फूल भी एलर्जी का कारण होते हैं। इनके संपर्क में आने पर खुजली, आंखों में जलन, लगातार छींक और खुजली जैसी समस्या हो सकती है।

रबड़ः- कुछ लोगों को रबड़ से बनी किसी भी चीज (गलव्स, कंडोम, मेडिकल इक्विमेंट आदि) के इस्तेमाल से जलन, नाक बहना, छींकना, सांस की घबराहट और खुजली की समस्याएं हो सकती हैं।

एलर्जी होने का खतरा ज्यादा होता है?

गांवों में रहनेवालों की तुलना में शहरों में रहने वालों में एलर्जी की समस्या ज्यादा पाई जाती है. जिन बच्चों को ज्यादा साफ-सफाई के साथ पाला जाता है, उनमें भी यह समस्या ज्यादा पाई जाती है, क्योंकि उनके शरीर का इम्यून सिस्टम ज्यादा डिवेलप नहीं हो पाता। इसके अलावा बच्चों में एलर्जी होने की आशंका बड़ों से कहीं ज्यादा होती है। इसी तरह बुजुर्गों में भी एलर्जी की समस्या काफी कॉमन है क्योंकि उनका इम्यून सिस्टम भी कमजोर हो जाता है।

कई बार एलर्जी आनुवांशिक भी होती है. पैरेंट्स को अगर धूल या किसी और चीज से एलर्जी हो तो बच्चे को एलर्जी होने के चांस बढ़ जाते हैं, हालांकि यह जरूरी नहीं है कि दोनों की एलर्जी का स्वरूप एक जैसा ही हो।

कैसे करें अनचाही एलर्जी से बचाव?

बच्चों के इम्यून सिस्टम को मजबूत करने के लिए उन्हें धूल-मिट्टी और धूप में खेलने दें. ये बच्चों को बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं। उन्हें बारिश या दूसरे पानी से भी खेलने दें. हां, धूल-मिट्टी में खेलने के बाद उनके हाथ-पैर अच्छे से धुलवाना न भूलें। अगर किसी को धूल और धुएं से एलर्जी है तो घर से बाहर निकलने से पहले नाक पर रुमाल रखना चाहिए. बचाव ही एलर्जी का इलाज है।

जिन लोगों को ठंड से एलर्जी है, वे ठंडी और खट्टी चीजों जैसे कि अचार, इमली, आइसक्रीम आदि के इस्तेमाल से बचें।

गंदगी से एलर्जी वाले लोगों को समय-समय पर चादर, तकिए के कवर और पर्दे भी बदलते रहना चाहिए। कार्पेट यूज न करें या फिर उसे कम-से-कम 6 महीने में ड्रायक्लीन करवाते रहें।

जिस दवा से एलर्जी है, उसे खाने से बचें. डॉक्टर को दिखाएं तो इस एलर्जी के बारे में जरूर बताएं।

किचन में एग्जॉस्ट फैन जरूर लगवाएं और खाना पकाते समय उसे चलाएं।

घर को हमेशा बंद न रखें. घर को खुला और हवादार बनाए रखें ताकि साफ हवा आती रहे।

खिड़कियों में महीन जाली लगवाएं और जाली वाली खिड़कियों को हमेशा बंद रखें क्योंकि खुली खिड़की से कीड़े और मच्छर आपके घर में घुस सकते हैं।

दीवारों पर फफूंद और जाले हो गए हों, तो उन्हें साफ करते रहें क्योंकि फफूंद के कारण भी एलर्जी हो सकती है।

बारिश के मौसम में फूल वाले प्लांट्स को घर के अंदर न रखें।

एलर्जी का सटीक और स्थाई इलाज

रोज सुबह नीबू पानी पीएं।

. खट्टी और ठंडी चीजों से परहेज करें।

. कभी-कभी कोई दवा खाने से भी एलर्जी हो जाती है इसलिए हमेशा दवा डॉक्टर से पूछकर ही लें।

अगर स्किन एलर्जी है तो फिटकरी के पानी से प्रभावित हिस्से को धोएं. नारियल तेल में कपूर या जैतून तेल मिलाकर लगाएं।

चंदन का लेप भी राहत देता है। इससे खुजली कम होती है और चकत्ते भी कम होते हैं।

आयुर्वेद, योगा, नेचुरोपैथी में एलर्जी

आयुर्वेद, योग और नैचुरोपथी एलर्जी से लड़ने में काफी कारगर हैं। एलर्जी से बचने के लिए पेट साफ रखना चाहिए. बहुत गर्म या बहुत ठंडा खाना नहीं खाना चाहिए। हमेशा साफ पानी पीना चाहिए. रोजाना करीब 15 मिनट अनुलोम-विलोम, कपालभाति, भस्त्रिका प्राणायाम करने से एलर्जी में फायदा होता है क्योंकि इनसे इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।

अगर जल्दी-जल्दी सर्दी और जुकाम की एलर्जी हो तो सुबह उठकर गुनगुने पानी में नींबू का रस मिलाकर पीएं।

प्रदूषण से होने वाली एलर्जी से बचने के लिए गुनगुने पानी में तुलसी, नीबू, काली मिर्च और शहद डालकर पीएं।

बदलते मौसम में होने वाली एलर्जी से बचने के लिए खट्टी चीजें जैसे कि अचार और तली-भुनी चीजें खाने से परहेज करें। ⓘ

(लेखक संस्थापक, प्रकृतिवेदा रिसर्च डेवलपमेंट प्राईवेट लिमिटेड हैं)

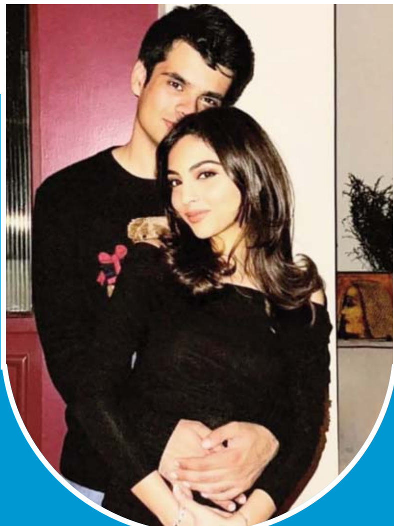

नए साल पर रेहान वाड्रा-अवीवा की सगाई को लेकर चर्चा

कुछ दिनों से लगातार रॉबर्ट वाड्रा और प्रियंका गांधी वाड्रा के बेटे रेहान की शादी को लेकर चर्चा रही थी। रेहान वाड्रा कई सालों से अवीवा बेग को डेट कर रहे हैं और अब उनकी शादी की खबरें आम हो रही हैं। अपडेट आया है कि काफी जल्दी दोनों शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। खबरें हैं कि नए साल के जश्न के लिए पूरा परिवार छुट्टी पर है इसी दौरान दोनों की सगाई होने वाली है। 31 दिसंबर की रात को ये सगाई होगी। रेहान वाड्रा और अवीवा बेग इस पल के लिए काफी ज्यादा उत्सुक हैं। रेहान वाड्रा और अवीवा का परिवार एक साथ इस नए साल के जश्न के लिए मौजूद है। रणथंबौर में होटल शेरबाग में दोनों की रिंग सेरेमनी हो सकती है। अवीवा का नाम सामने आते ही लोग उनको लेकर सोशल मीडिया पर ढेरों बातें कर रहे हैं और गूगल पर उनको लेकर सर्च भी सामने आ रहे हैं। प्रियंका और ना ही रॉबर्ट वाड्रा की तरफ से इस सगाई को लेकर कोई आधिकारिक बात सुनी गई है और ना रेहान ने कुछ कहा है। देखने वाली बात होगी कि आने वाला दिन क्या नई खबर लेकर सामने आता है। रेहान राजनीति से कोसों दूर हैं और इसके पहले कभी लाइमलाइट में नहीं रहे।लोगों के ढेरों कमेंट्स आ रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, "एक दिन ओर रुक जाते नया साल के दिन करते सगाई।" एक ने लिखा, "रेहान अबीबा बेग डोनो मुस्लिम फि र गांधी कैसे।" एक ने लिखा, "दोनों को बधाई।" एक ने लिखा, "मुबारकबाद।"

नए साल पर सनी लियोन ने किया डांस

बॉलीवुड की जानी मानी एक्ट्रेस और मॉडल सनी लियोन अपनी खूबसूरती के साथ ही अपनी डांस परफॉर्मेंस के लिए भी जानी जाती हैं। नए साल के सेलिब्रेशन के मौके पर सनी लियोन की हर साल ही बुकिंग रहती है। देश के बड़े शहरों में सनी लियोन परफॉर्म कर नए साल के जश्न को और भी बढ़ा देती हैं। सनी लियोन का इस बार का कार्यक्रम कान्हा की नगरी मथुरा में होना था, लेकिन सनी वहां परफॉर्म कर पातीं उससे पहले ही साधु-संतों ने मिलकर सनी लियोन के इस कार्यक्रम के खिलाफ हो गए। श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर के मुख्य याचिका कर्ता श्री कृष्ण जन्मभूमि के अध्यक्ष दिनेश फलाहारी ने इस संबंध में जिलाधिकारी को पत्र लिखकर सनी लियोन के होने वाले कार्यक्रम को तत्काल निरस्त करने की मांग की है। याचिकाकताओं का कहना है कि इस तरह के कार्यक्रम मथुरा नगरी की मर्यादा, संस्कृति, गरिमा और आध्यात्मिक पहचान के विरुद्ध है।

चार हफ्ते राज करने के बाद अब पीछे हटी 'धुरंधर'

रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधर' बॉक्स ऑफिस पर लगातार अच्छा परफॉर्म कर रही है। रिलीज के चार हफ्ते बीत जाने के बाद भी फिल्म की कमाई मजबूत बनी हुई है। इसके बाद 'किस किसको प्यार करूं 2', 'अवतार 3' और 'तू मेरी मैं तेरा, मैं तेरा तू मेरी' जैसी कई फिल्में सिनेमाघरों में आईं, लेकिन ये दर्शकों पर खास असर नहीं छोड़ सकीं।बीते कुछ हफ्तों में सिनेमाघरों में स्क्रीन और शो को लेकर काफी चर्चा रही। वजह यह थी कि 'धुरंधर' को दूसरी नई फिल्मों की तुलना में ज्यादा शो दिए जा रहे थे, जिससे नई रिलीज फिल्मों को कम स्क्रीन मिल पाई। अब इस हफ्ते अगस्त्य नंदा और धर्मेंद्र की फिल्म 'इक्कीस' रिलीज होने जा रही है। 2 जनवरी से 'धुरंधर' अपने 5वें हफ्ते में एंटर करेगी। इसी के साथ अब इसके शो की संख्या धीरे-धीरे कम की जाएगी। एक सूत्र के अनुसार, 'धुरंधर' और 'इक्कीस' दोनों ही जियो स्टूडियोज की फिल्में हैं। ऐसे में अब मेकर्स को 'धुरंधर' के शो घटाने में कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि फिल्म पहले ही अच्छा बिजनेस कर चुकी है। 'इक्कीस' के लिए लगभग 30 से 40 प्रतिशत शो मांगे गए हैं।एक सूत्र के अनुसार, 'धुरंधर' और 'इक्कीस' दोनों ही जियो स्टूडियोज की फिल्में हैं। ऐसे में अब मेकर्स को 'धुरंधर' के शो घटाने में कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि फिल्म पहले ही अच्छा बिजनेस कर चुकी है। 'इक्कीस' के लिए लगभग 30 से 40 प्रतिशत शो मांगे गए हैं।

LADDAN

TEACHER TRAINING COLLEGE

Recognized by NCTE, Delhi and Affilited to SCERT Lucknow

D.EL.Ed./B.T.C.

for Minority Institution

Hashim Ali (Bakshi Ji)
Director

Nazim Ali (Shiblu)
Manager

Phulpur to Saidabad Road,
Dhurrw,Handia,
Prayagraj

Mob. : 9415632873,
9336392654

RNI No. : UPBIL/25/A0683

प्रकृतिवेदा

WELLNESS CENTER

प्राकृतिक रोगमुक्त दुनिया

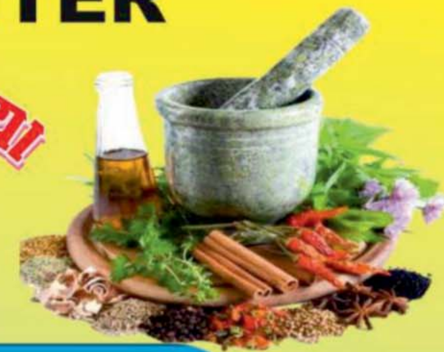

अगर आप किसी भी बीमारी से परेशान हैं
और इलाज करा कर थक गये है।
तो आपको मिल सकता है इसका स्थाई समाधान ।

आपकी कोई भी बीमारी रिवर्स हो सकती है, प्रकृतिवेदा वैलनेस सेंटर में जहां पर प्राकृतिक चिकित्सा के सभी आयाम जैसे आयुर्वेद, पंचकर्म, योग, ध्यान नेचुरोपैथी, फिजियोथेरेपी न्यूरो थेरेपी, एक्यूप्रेशर, प्राकृतिक आहार, के विशेषज्ञों द्वारा सभी बीमारियों का जड़ से इलाज संभव है और इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है ! पूरी तरह से शुद्ध, प्राकृतिक एवं जैविक जड़ी बूटियों से बनाए गए प्रोडक्ट जो कि काफी रिसर्च के बाद खुद की मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में शास्त्रोक्त विधि से निर्माण किया गया है, जिसकी वजह से रोगों में बहुत ही लाभकारी परिणाम मिलते हैं।

आयुर्वेद

नेचुरोपैथी

पंचकर्म

योग

मेडिटेशन

एक्यूप्रेशर

प्राकृतिक आहार

न्यूरो थेरेपी

पता : D8 NSIC नैनी (सरगम के पास) प्रयागराज

www.prakitivedawellness.com Mob.: 8400450109, 8400450101

सिटी सेंटर-होटल प्रयाग इन, निकट आकाशवाणी अशोक नगर, प्रयागराज